।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/–
आजीवन : 1100/–
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
डाक पंजीकरण संख्या–
UP MRD Dn-64/2018-20
दयानन्दाब्द १९५
मानव सृष्टि सं.– १९६०८५३११९
सृष्टि सं.– १९७२९४९११९

वर्ष–17 अंक–17 मार्गशीष शु. 9 से पौष कृ. 10 सं. 2075 वि. 16–31 दिसम्बर 2018 अमरोहा, उ.प्र. पृष्ठ–20 प्रति–5/–

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में महामहिम राष्ट्रपति को प्रतीक चिन्ह भेंट करने का दृश्य साथ में मंचासीन देश के वरिष्ठ राजनेता, मूर्धन्य तपस्वी, संन्यासी एवं आर्य नेता –केसरी

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन–2018

अद्भुत, अकल्पनीय, अतुलनीय व अद्वितीय– आर्यों का महाकुम्भ

भारत के महामहिम राष्ट्रपति ने किया सम्मेलन का उद्घाटन

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के उद्घोष व विश्वशान्ति के सन्देश के साथ सम्पन्न हुआ महासम्मेलन

- स्वामी दयानंद सरस्वती सामाजिक और आध्यात्मिक सुधार के निर्भीक योद्धा थे। मुझे भी आर्य समाज द्वारा कानपुर में स्थापित एक संस्थान में उच्च–शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला। –राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द
- अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली उद्घाटन से लेकर समापन तक हर पल भव्य और उत्साह से भरपूर रहा। – महाशय धर्मपाल
- योग के तो बड़े–बड़े आयोजन देखे थे यज्ञ का इतना बड़ा आयोजन अभी तक नहीं देखा था। –योग गुरु स्वामी रामदेव
- आर्यसमाज का सम्पूर्ण संगठन राष्ट्र सेवा के लिए सदैव तत्पर रहा है और रहेगा। –सुरेशचन्द्र आर्य (प्रधान) सार्वदेशिक सभा
- एक जातिविहीन समाज के निर्माण का श्रेय यदि किसी को जाता है तो आर्य समाज को जाता है। –योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश
- अनिवार्य शिक्षा का जो मन्त्र भारत सरकार ने 2009 में दिया यह ही मन्त्र तो स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने 135 वर्ष पहले दिया था। –केन्द्रीय राज्य मंत्री सत्यपाल सिंह
- प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के बाद आजादी की लौ को यदि किसी ने जीवित रखा तो वह सिर्फ आर्य समाज था। –मनोहर लाल खट्टर, मुख्यमंत्री हरियाणा
- देश में शिक्षा की कमी को सर्वप्रथम आर्य समाज स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने महसूस किया। –जगदीश मुखी राज्यपाल आसाम
- स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने जो विचार हमें दिया वही विचार भारत को विश्व गुरु बना सकता है। –नितिन गडकरी केन्द्रीय परिवहन मंत्री
- आर्य समाज एक संस्था नहीं बल्कि देश का प्राण हैं। –आचार्य देवव्रत हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल
- दुनिया में शांति चाहिए तो हमें पुनः वेदों की ओर लौटना होगा। –गंगा प्रसाद राज्यपाल, सिक्किम

२ देखते ही बनती थी समारोह की भव्यता व विशालता

३ अमिट छाप छोड़ गया अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

५ भारत के महामहिम राष्ट्रपति का उद्बोधन

६ १७ सभागारों में चले भव्य कार्यक्रम

७ स्वागताध्यक्ष महाशय धर्मपाल का स्वागत भाषण

८ आर्यों का अद्वितीय महाकुंभ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

९ केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह का उद्बोधन

१० गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अंकित हुआ एकरूप महायज्ञ

१६ सभा प्रधान सुरेश चन्द्र आर्य का उद्बोधन

१७ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने दिया प्रयागराज कुंभ-२०१९ का न्यौता

दीप प्रज्वलन : अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के उद्घाटन सत्र में महामहिम राष्ट्रपति के साथ उपस्थित राजनेता व मूर्धन्य संन्यासी व आर्य नेतागण- केसरी

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

देखते ही बनती थी समारोह की भव्यता और विशालता

देखिए विशेषताओं की एक बानगी

- अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का विश्व स्तर पर किया गया था-प्रचार-प्रसार
- दिल्ली के रामलीला मैदान के क्षेत्रफल 5.25 लाख स्क्वेयर फीट से लगभग सात गुना बड़ा 33 लाख स्क्वेयर फीट था सम्मेलन स्थल का विशाल आकार
- 10 लाख स्क्वेयर फीट एरिये पर बने थे-वाटर प्रूफ पांडाल
- धूल मिट्टी से बचाव के लिए 5 लाख स्क्वेयर फीट भूमि पर बिछा था-कारपेट
- मैदान को समतल करने के लिए 4 जे.सी.बी मशीन और 2 रोड रोलर तीस दिन तक लगातार लगे रहे
- 20 हजार रनिंग फीट टीन बाउंड्री वाल की थी सुरक्षित व्यवस्था
- सम्मेलन स्थल पर कराए गए 22 पानी के ट्यूबवैल बौरिंग
- 3 किलोमीटर लंबी बिछवाई थी पीने के पानी की पाईप लाईन
- 24 स्थानों पर बने थे पानी पीने के प्लेटफार्म
- स्वच्छता मे चार दिनों तक लगातार 150 सफाई कर्मचारियों ने की कड़ी मेहनत
- 127 समितियों के 2500 कार्यकर्त्ता दिन-रात लगे रहे व्यवस्थाओं में
- अभूतपूर्व सौंदर्य एवं भव्य शोभा से युक्त था-सम्मेलन का मुख्य प्रवेशद्वार
- सम्मेलन स्थल की दिव्य साज-सज्जा से खिल उठे आर्यजनों के तन-मन
- भारत के महामहिम राष्ट्रपति जी ने अपने करकमलों से किया सम्मेलन का उद्घाटन
- भारत के प्रधानमंत्री जी ने भेजा शुभकामना संदेश
- हरियाणा और उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री भी पधारे सम्मेलन में
- स्वामी रामदेव जी ने दिया जागृति का ओजस्वी उद्बोधन और बहाई दुग्ध छाछ और पेयजल की गंगा
- भारत के गृहमंत्री की उपस्थिति में भव्य समापन समारोह
- चार केंद्रीय मंत्री, तीन राज्यपाल, पांच सांसदों सहित सैकड़ों गणमान्य महानुभावों की रही उपस्थिति
- 8500 हवन कुण्डों पर दस हजार याज्ञकों ने एक साथ यज्ञ करके बनाया विश्व रिकार्ड
- मुख्य पांडाल सहित 17 स्थानों पर एक साथ भव्य कार्यक्रमों के भव्य आयोजन
- अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में दान की अपील और घोषणा न करने की नूतन परंपरा का आगाज
- सम्मेलन स्थल इतना विशाल था कि पूरा सम्मेलन कोई भी नहीं देख पाया
- आर्य वीर एवं वीरागनांओं के व्यायाम प्रदर्शन से अभिभूत हुए आर्यजन
- 60 स्थानों पर आगुन्तकों के रहने की थी उत्तम व्यवस्था
- 60 बसों द्वारा की गई थी उन्हें लाने ले जाने की कुशल व्यवस्था
- 32 देशों के प्रतिनिधियों ने की सम्मेलन की सुंदर व्यवस्था
- 150 स्कूल एवं गुरुकुलों के बच्चों ने लिया भाग
- लगभग 200000 से अधिक आर्यजनों ने लिया सम्मेलन में भाग
- 40 प्रतिशत से अधिक संख्या 30 वर्ष से कम उम्र के लोगों की थी
- सभी आगुन्तकों के लिए भोजन की थी सुंदर व्यवस्था
- प्रांतीय रूचि के अनुसार भी बनाए गए थे स्वादिष्ट सुपाच्य व्यंजन
- सम्मेलन स्थल पर दूध, दही, छाछ का लोगों ने लिया खूब आंनद

वर्षों पूर्व प्रारम्भ हुई थी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-२०१८ की वृहद योजना

रोहिणी सैक्टर-10 में की गयी महर्षि दयानन्द नगर की स्थापना

सन् 1927 से आरंभ हुई अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों की श्रंखला में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 के विशाल स्तर पर आयोजन की वृहद योजना वर्षों पूर्व प्रारंभ हो गई थी, जिसकी उदघोषणा 25, दिसंबर 2017, स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस के कार्यक्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने स्वयं की थी। इस विराट, विशाल, भव्य आयोजन की परिकल्पना, विचारणा और योजना बनाना भी अपने आप में एक असाधारण कार्य था। इस महान विराट सम्मेलन की भव्य योजना को सार्वदेशिक एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्मानित अधिकारियों ने बड़ी सरलता-सहजता और सूझ-बूझ से तैयार किया। विश्व के 32 देशों में स्वयं जा-जाकर सबको निमंत्रण दिए, लक्ष्यद्वीप को छोड़कर भारत की सभी प्रांतीय सभाओं में, महानगरों में, शहर, कस्बों और गांवों में सबको सप्रेम निमंत्रण दिया। अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन से पूर्व 16-सितंबर 2018 को रोहिणी क्षेत्र में एक विशाल शोभायात्रा निकाली गई और उसी दिन स्वर्ण जयंती पार्क, सैक्टर-10, रोहिणी में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन हेतु "महर्षि दयानंद नगर" की स्थापना की गई। इस शोभायात्रा में हर आयु वर्ग के नर-नारी, संन्यासी, आर्य नेता, विद्वान, पुरोहित और विद्यार्थियों ने उत्साह से भाग लेकर सम्मेलन की भव्य सफलता के संकेत दे दिए।

सम्मेलन का विश्व स्तर पर किया गया प्रचार-प्रसार

आजकल प्रचार-प्रसार का जमाना है, इस तथ्य को स्वीकारने से कोई इंकार नहीं कर सकता। अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का प्रिंट तथा इलैक्ट्रानिक दोनों माध्यमों से भरपूर मात्रा में विश्व स्तर पर विधिवत प्रचार किया गया। इसके लिए टी.वी के सभी प्रतिष्ठित न्यूज चैनलों पर लगभग दो महीने पहले से ही विज्ञापन आने शुरू हो गए थे। प्रमुख अखबारों के माध्यम से विज्ञापन दिए जा रहे थे, मोबाइल फोन की रिंगट्यून पर सम्मेलन का निमंत्रण, गाने के रूप में बजने लगा था। दिल्ली में लगभग सभी आर्य समाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं और अन्य महत्वपूर्ण स्थानों पर बड़े-बड़े कलर फुल हॉर्डिंग्स, बैनर लगाए गए थे।

इंटरनेट के माध्यम से व्हाटसैप, फेसबुक, ईमेल आदि के द्वारा भी सम्मेलन का प्रचार-प्रसार लगातार चलता रहा। इस तरह के ऐतिहासिक प्रचार के द्वारा जन-जन तक सम्मेलन की सूचना पहुंचाई गई, जिसे सुनकर, देखकर और पढ़कर लाखों की संख्या में आर्यजन इस महासम्मेलन के साक्षी बने।

अभूतपूर्व सौंदर्य एवं भव्य शोभा से युक्त था सम्मेलन का मुख्य प्रवेशद्वार

यूं तो संपूर्ण सम्मेलन स्थल की शोभा अदभुत और अनुपम थी, किंतु अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के मुख्य प्रवेशद्वार की भव्यता और दिव्यता देखते ही बनती थी। सड़क के दोनों तरफ दो-दो किलोमीटर दूर से ही दिखाई देने वाले इस विशाल द्वार पर ओम् ध्वज शोभायमान था। इस द्वार को सड़क से गुजरने वाले यात्री बड़े ध्यान से देखते थे। क्योंकि केसरिया, सफेद और पीले रंगों से सजा-धजा यह लगभग 35 फुट से भी ऊंचा द्वार सबके मन में सात्विकता का भाव जगा रहा था। इस मुख्य द्वार के मध्य भाग में महर्षि दयानंद जी सहित महापुरुषों के प्रेरक चित्र शोभायमान थे, जिन्हें देखकर आने वाले आर्यजनों के मुख से अनायास ही ऋषि दयानंद और आर्य समाज के जयघोष उच्चारित हो रहे थे।

सबका मन मोह गया मुख्य पांडाल का अद्भुत आकर्षक दृश्य

सम्मेलन के मुख्य पांडाल का दृश्य अद्भुत, अनुपम और प्रेरणादायी था। एक भव्य पांडाल जिसमें सामने महर्षि दयानंद का प्रेरणाप्रद चित्र और दोनों तरफ अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का लोगो, यह सुंदर चित्रण समस्त आर्यजनों के लिए लंबे समय तक अविस्मरणीय रहेगा। सुंदर साउंड व्यवस्था, बैठने की समुचित आदर्श व्यवस्था, साफ-सफाई का पूरा ध्यान और मंच से प्रस्तुत होने वाले वैदिक विचार, किसी को भी अनुशसित होकर बैठने के लिए मजबूर करने के लिए काफी थे। इस प्रमुख पांडाल में एक साथ 25 हजार आर्य जनों के बैठने की व्यवस्था थी और चारों दिन यह पांडाल खचाखच भरा रहा, जबकि हजारों लोग पांडाल के बाहर स्क्रीन पर देखते सुनते रहे। इसके साथ-साथ 17 सभागारों में एक साथ विभिन्न कार्यक्रम चलते रहे। इन सभागारों में भी हजारों की संख्या मौजूद रही।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में विनय आर्य सम्बोधित करते तथा मंचासीन राजनेता व मूर्धन्य संन्यासी व आर्य नेतागण- केसरी

अमिट छाप छोड़ गया अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

विनय आर्य, महामंत्री- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

नई दिल्ली (स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी) महर्षि दयानन्द नगर। अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन करना आर्य समाज की 91 वर्षों पुरानी आदर्श परंपरा है। इस परंपरा के इतिहास में देश के राष्ट्रपति का आगमन और उनके करकमलों द्वारा उद्घाटन अपने आप में प्रथम ऐतिहासिक घटना है, जो कि चिरकाल तक अविस्मरणीय रहेगी। 25 अक्तूबर की सुबह का सूर्योदय आर्य जगत के लिए एक नया सवेरा सिद्ध हुआ। जब स्वर्ण जयंती पार्क रोहिणी के विशाल प्रांगण में भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ केविंद जी का पदार्पण हुआ। तब चारों तरफ महर्षि दयानंद की जय, आर्य समाज अमर रहे, भारत माता की जय के नारे गुंजायमान हो गए। इस अवसर पर राष्ट्रपति जी ने अपने करकमलों से सम्मेलन का उदघाटन कर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए महर्षि दयानंद और आर्य समाज की विशेष रूप से प्रशंसा की। विशाल पांडाल खचाखच भरा हुआ था, चारों तरफ आर्य ही आर्य नर-नारी दिखाई दे रहे थे। स्वयं राष्ट्रपति जी भी आर्यों के इस विशाल जनसमूह को देखकर गदगद हो गए और उन्होंने विश्व के बत्तीस देशों और भारत के कोने-कोने से आए आर्यजनों को इस विशाल सम्मेलन के आयोजन के लिए बधाई दी और अपने जीवन से जुड़े आर्य समाज के संस्मरण सुनाकर सबको आत्मविभोर कर दिया।

सार्वदेशिक एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में 25 से 28 अक्तूबर 2018 के बीच स्वर्ण जयंती पार्क रोहिणी सैकटर-10 के विशाल प्रांगण में चार दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें देश के कोने-कोने और विश्व के 32 देशों से पधारे लगभग 2 लाख भी से अधिक आर्यजनों ने भाग लेकर आर्य समाज के विश्वव्यापी संगठन-शक्ति का परिचय दिया। 25 अक्तूबर 2018 को आर्य महासम्मेलन का उद्घाटन पुण्यमय भारतदेश के महान राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी ने अपने करकमलों से द्वीप प्रज्जवलित कर किया। इस अवसर पर आर्य समाज की ओर से राष्ट्रपति जी को चारों वेदों का सैट और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। ज्ञात हो कि इस उद्घाटन सत्र में केंद्रीय मंत्री डॉ. हर्ष वर्धन जी , डॉ. सत्यपाल जी, स्वामी सुमेधानंद जी सांसद, आचार्य देवव्रत राज्यपाल हिमाचल प्रदेश, श्री गंगाप्रसाद जी सिक्किम, एम.डी.एच के चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी सहित अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

केन्द्रीय मंत्री विजय गोयल महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुए- केसरी

आर्यरत्न महाशय धर्मपाल के साथ केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी- केसरी

गृह मंत्री राजनाथ सिंह के साथ वैदिक उद्घोष करते बच्चे- केसरी

सम्मेलन स्थल की दिव्य साज-सज्जा से खिल उठे आर्यजनों के तन-मन

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर स्वर्ण जंयती पार्क सैक्टर-10, रोहिणी का सौंदर्यीकरण अपने आप में एक मिसाल बन गया और सम्मेलन की दिव्य साज-सज्जा को देखकर लाखों महानुभावों के तन-मन उमंग-उत्साह और उल्लास से खिल उठे। पूरे सम्मेलन स्थल के चारों और ओम् ध्वज लहरा रहे थे। सम्मेलन के प्रवेश द्वार से भीतर आते ही बाईं और विशाल स्वागत कक्ष में पंजीकरण के साथ ही आगंतुकों के स्वागत में जल की सुंदर व्यवस्था थी। इसके सामने ही 32 देशों के ध्वजों के बीच ओम् ध्वज आर्यों की विश्व व्यापकता को सिद्ध कर रहा था।

इसके साथ ही बाईं और भव्य यज्ञशाला का दृश्य अनुपम और अनूठा था। सार्वकालिक यज्ञ में लगातार वैदिक मंत्रों की ध्वनियों के साथ स्वाहा-स्वाहा से सारा वातावरण यज्ञमय हो रहा था। यज्ञशाला के दाईं तरफ सम्मेलन से सबंधित व्यवस्थाओं के सभी कार्यालय बने हुए थे। जहां पर आगन्तुकों को आवश्यकतानुसार सारी सुविधाएं प्राप्त हो सकें। कार्यालय के सामने से जाती हुई पूर्व दिशा की ओर सड़क के आरंभ में ही एक सर्कल बना हुआ था, जिस पर चारों वेदों की आकृति सबके मन को मोह रही थी। इस सड़क पर चलने से पहले ही बाईं और महर्षि देव दयानंद का रेत पर उकेरा हुआ रंगीन चित्र समस्त आर्यजनों को ऊर्जा प्रदान कर रहा था। सड़क के मध्य में डिवाडर के स्थान पर लगे हुए वेद मन्त्रों की सूक्तियां और उनके भावार्थों को लोग पढ़ते हुए लगातार विचरण करते रहे। सड़क के दाईं ओर 17 सभागार अपनी भव्य छटा बिखेर रहे थे, तो बाईं ओर विशाल मुख्य पांडाल सहित योग ध्यान का स्थल अपनी ओर आर्कषित कर रहा था। यह रास्ता सीधे भोजनालय के विशाल पांडाल की और जाता था। लेकिन सभागारों के बाद दाईं तरफ आर्यजगत के सभी पुस्तक विक्रेता पेट की भूख से पहले ज्ञान की पिपासा को शांत करने वाले सिद्ध हो रहे थे।

150 से ज्यादा पुस्तकों की दुकानें सभी आर्यजनों को अपनी ओर खींच रही थी। इसके साथ ही 32 देशों के तीन हजार आर्यजनों के लिए भोजन की सुंदर व्यवस्था की गई थी, जबकि बांयी और सम्मेलन के मुख्य पांडाल से आर्य जगत के महान सन्यासियों, विद्वानों, आर्यनेताओं, राजनेताओं के ओजस्वी विचार और वैदिक धर्म की जय जयकार सहज सुनाई दे रही थी। सामने भोजनालय स्थल की ओर दांए मुड़ने से पूर्व टी प्वाइंट पर महर्षि दयांनद जी का दिव्य चित्र आर्यों की आन-बान और शान का प्रतीक सिद्ध हो रहा था। चारों तरफ आर्य ही आर्य जैसे कृण्वन्तों विश्वमार्यम् का नारा-जयघोष साकार हो रहा था। सम्पूर्ण सम्मेलन स्थल पर लाईटिंग की अद्भुत व्यवस्था थी। शाम होते ही सारा सम्मेलन स्थल जगमगाने लगता था। ये अनुपम नजारा सबके मन को ऊर्जावान बना रहा था।

'गावो विश्वस्य मातर:' - गाय सबकी माता है- यह वैदिक संदेश देने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन स्थल पर एक लघु गऊशाला की स्थापना की गयी जिसने सभी को आकर्षित किया। - केसरी

'यज्ञो वैयी श्रेष्ठतमं कर्म:' - यज्ञ सर्वश्रेष्ठ कर्म है- सम्पूर्ण परिसर में यह वैदिक संदेश निरन्तर गुंजित होता रहा। यह है मुख्य यज्ञ मण्डप स्थित विशाल यज्ञशाला, जहां चारों दिन वेद की पवित्र ऋचाओं से श्रद्धालु यजमानों ने आहुतियां प्रदान कीं- केसरी

घर-घर तक पहुँचाएं कालजयी ग्रंथ

सत्यार्थ प्रकाश

मूल्य- ५०/-, १५०/-

प्रकाशक : आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)

वर चाहिए

वैदिक विचारों की संस्कारित ब्राह्मण कन्या। प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल चोटीपुरा से। शिक्षा- बी0टैक0। हिन्दुस्तान एरोनैटिक्स, बंगलूरु में प्रबन्धक युवती हेतु आर्य समाजी परिवार का समकक्ष संस्कारित युवक चाहिए।
सम्पर्क सूत्र : 8368508395, 9456274350

वधु चाहिए

आर्य परिवार, संस्कारित, आयु- 40 वर्ष, कद- 5 फुट 8 इंच, शिक्षा- स्नातक, व्यवसायी युवक हेतु आर्य परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए। सम्पर्क- 09457274984

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए, और चुनिए एक सुयोग्य जीवन-साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/- तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.) (चलभाष : 09412139333)

टंकारा चलो : आर्यावर्त केसरी के संयोजन में

टंकारा, अहमदाबाद, द्वारिकापुरीधाम, पोरबंदर तथा सोमनाथ आदि

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा कार्यक्रम-2019

कार्यालय- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ.प्र.)

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा- 26 फरवरी से 06 मार्च 2019 तक

प्रस्थान : 26 फरवरी 2019 को प्रात: 7 बजे मुरादाबाद से आला हज़रत एक्सप्रेस 4311 अप द्वारा। (25 फरवरी 2019 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्यसमाज मंदिर, गंज, स्टेशन रोड, मुरादाबाद)

वापसी : 06 मार्च 2019 को अमरोहा सायं 5:45 बजे आला हज़रत एक्सप्रेस से।

: परिभ्रमण कार्यक्रम :

- **अहमदाबाद, आर्यवन-रोजड़**- साबरमती आश्रम, अक्षरधाम, वानप्रस्थ साधक आश्रम, गुरुकुल आर्यवन आदि।
- **द्वारिकापुरीधाम**- चार धामों में से एक धाम द्वारिकाधीश मंदिर, गोमती गंगा, श्री कृष्ण महल, भेंटद्वारिका, रुक्मणी मन्दिर, गोपी तालाब, आदि।
- **नागेश्वर महादेव**- द्वादश ज्योतिर्लिंग में से एक नागेश्वर महादेव।
- **पोरबन्दर**- महात्मा गांधी का जन्मस्थल, आर्ष कन्या गुरुकुल, सुदामा महल, नक्षत्रशाला, भारतमाता मंदिर आदि।
- **भालका तीर्थ**- वह ऐतिहासिक स्थली, जहां योगेश्वर श्रीकृष्ण को तीर लगा था।
- **सोमनाथ तीर्थ तथा दीव**- ऐतिहासिक सोमनाथ मन्दिर तथा समुद्र दर्शन एवं 'लाइट एंड साउंड शो' का दिग्दर्शन।
- **ऋषि जन्मभूमि टंकारा**- महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली, ऐतिहासिक शिवालय, पावन नदी, गोशाला, टंकारा ट्रस्ट भवन तथा आर्यसमाज का परिभ्रमण एवं बोधोत्सव में सहभागिता।

: सहयोग राशि :

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास तथा परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था आर्यावर्त केसरी- प्रबंध समिति द्वारा होगी।

इस यात्रा निमित्त कुल धनराशि रु० 4500/- (सीनियर सिटीजन के लिए रु० 4000/-) देय होगी, जिसमें से रिजर्वेशन तथा बुकिंग आदि व्यवस्थाओं के लिए रु० 2000/- की धनराशि दिनांक- 31 दिसम्बर 2018 तक नकद या आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के नाम से देय डिमांड ड्राफ्ट/चैक द्वारा कार्यालय के पते पर भेजनी आवश्यक होगी। शेष धनराशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित है। इसी प्रकार जो महानुभाव AC III में यात्रा करने के इच्छुक हों, उनके लिए भी आरक्षण की सुविधा उपलब्ध है। वातानुकूलित श्रेणी के लिए कुल रु० 2000/- तक अतिरिक्त धनराशि देय होगी, जिसमें से रिजर्वेशन तथा बुकिंग आदि व्यवस्थाओं के लिए रु० 3000/- की धनराशि अग्रिम देय होगी। शेष धनराशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित है। यह धनराशि आपके द्वारा 'आर्यावर्त केसरी' के भारतीय स्टेट बैंक शाखा- अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या- 30404724002, IFSC Code SBIN0000610 में जमा करायी जा सकती है। प्रदत्त धनराशि की रसीद कार्यालय द्वारा आपको तत्काल प्रेषित की जाएगी। विलम्ब से प्राप्त धनराशि की दशा में रिजर्वेशन सुनिश्चित नहीं हो पाते, जिससे भारी असुविधा हो सकती है। इसलिए जितनी शीघ्रता हो सके, अपनी धनराशि जमा करा दें। समुचित व्यवस्था में आपका पूर्ण सहयोग प्रार्थनीय है।

-: यात्रियों को आवश्यक निर्देश :-

● गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। ● यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें, ● ओढ़ने, बिछाने की चादर, टॉर्च, नोट बुक, पैन्सिल, परिचय-पत्र (आईडी प्रूफ), दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलिया, शेविंग का सामान, तेल आदि। ● अपनी औषधि साथ रखें। ● आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। ● आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, यह भी सूचित करें।

नोट :

१. परिस्थितिवश यात्रा की तिथियों तथा परिभ्रमण-स्थलों में आंशिक परिवर्तन का अधिकार संयोजक को होगा। २. यात्रा रेलगाड़ी तथा डीलक्स बसों द्वारा संपन्न होगी। ३. आवासीय व्यवस्था ट्रस्ट अथवा तीर्थस्थलों पर उपलब्ध व्यवस्था के अन्तर्गत रहेगी। यदि कोई महानुभाव होटल में रुकना चाहते हों, तो इस सुविधा के लिए होटल का वास्तविक शुल्क अलग से देय होगा, जिसके लिए पूर्व में अवगत कराना होगा, अथवा यह व्यवस्था यथासंभव उपलब्धता पर निर्भर रहेगी। कोटिश: धन्यवाद;

आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का पावन कार्यक्रम बनाएं...

-डॉ. अशोक कुमार आर्य, यात्रा संयोजक एवं संपादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कालोनी, निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ०प्र०)- 244221
(चलभाष : 09412139333, 8630822099)

❒ हरिश्चन्द्र आर्य- अधिष्ठाता (05922-263412), ❒ अभय आर्य (9927047364), नरेन्द्रकांत गर्ग- व्यवस्थापक (09837809405),
❒ सुमन कुमार वैदिक- सह व्यवस्थापक (09456274350)

भारत के राष्ट्रपति महामहिम रामनाथ कोविन्द का उद्घाटन समारोह में सम्बोधन

आर्यसमाज ने दी सम्पूर्ण विश्व को एक नई दिशा

महामहिम राष्ट्रपति का सम्बोधन :

यहां उपस्थित आप सभी लोगों में आर्य समाज के आदर्शों और **महर्षि दयानंद सरस्वती** के प्रति श्रद्धा और उत्साह का भाव देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि इस अंतर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन में भाग लेने के लिए 32 देशों से प्रतिनिधि पधारे हैं। आप लोगों की ऊर्जा और आर्य समाज की सक्रियता को देखकर मुझे **श्री अरविंद घोष** का एक कथन याद आता है। उन्होंने स्वामी दयानंद जी के बारे में कहा था कि 'वे मनुष्यों और संस्थाओं के मूर्तिकार हैं'। उनकी क्षमता को देखते हुए **ईश्वर चन्द्र विद्यासागर** और **केशव चन्द्र सेन** सरीखे समाज सुधारकों ने भी यह चाहा कि स्वामी जी को जनता के साथ संवाद करना चाहिए और उनका उद्धार करना चाहिए। आगे चलकर **स्वामी दयानंद सरस्वती** की प्रेरणा से **आत्मानन्द सरस्वती, लाला हंसराज, पंडित गुरुदत्त, स्वामी श्रद्धानंद** और **लाला लाजपत राय** जैसे परोपकारी महापुरुषों ने आर्य समाज के प्रकल्पों को आगे बढ़ाया। सचमुच ही स्वामी दयानंद जी के आदर्शों की प्रेरणा से करोड़ों मनुष्यों के चरित्र का निर्माण हुआ है। मैं आप सबके साथ उनके सम्मान में नमन करता हूँ।

यहाँ जो मंत्र हमने सुने उनका संदेश हमारी बुद्धी और चेतना को सब प्रकार से शुद्धा करने का है। ये मंत्र धर्म और संप्रदाय से ऊपर उठकर, पूरी मानवता को प्रकाशित करने के लिए आवाहन हैं। जैसा कि सभी जानते हैं उन्नीसवीं सदी में एक ऐसा दौर आया था जब पश्चिमी साम्राज्यवाद अपनी बुलंदी पर था, और भारत के लोग अपनी संस्कृति और मान्यताओं को कमजोर समझ रहे थे। अंध-विश्वासों और कुरीतियों ने समाज को जकड़ रखा था। ऐसे समय में स्वामी दयानंद सरस्वती ने पुनर्जागरण और आत्म-गौरव का संचार किया। वे सामाजिक और आध्यात्मिक सुधार के निर्भीक योद्धा थे। उन्होंने शिक्षा, समाज सुधार विशेषकर अस्पृश्यता- निवारण और महिला सशक्तीकरण के ऐसे प्रभावी कदम उठाए जो आज तक भारतीय समाज के लिए और पूरे विश्व के लिए प्रासंगिक हैं। उन्होंने हमारी आस्थाओं को शक्ति प्रदान करने के साथ-साथ आचार-विचार से जुड़ी पद्धतियों को तर्क की कसौटी पर परखने का उपदेश दिया, और समाज को कुरीतियों और आडंबरों से मुक्त कराया। आस्था और आधुनिकता का यह समन्वय स्वामी जी की अनमोल देन है। स्वामी दयानंद की सबसे लोकप्रिय और महत्वपूर्ण पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' का पहला संस्करण सन 1875 में प्रकाशित हुआ

विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द- केसरी

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भारत के महामहिम राष्ट्रपति जी का उद्बोधन

था। इसी वर्ष मुंबई में उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। यह तथ्य उल्लेखनीय है कि 'सत्यार्थ प्रकाश' में स्वामी दयानंद ने नमक कानून का विरोध किया था। वे इस कानून को गरीबों के लिए अहितकर मानते थे। हम सभी जानते हैं इस पुस्तक के प्रकाशित होने के 55 वर्षों के बाद 1930 में डांडी में गांधी जी ने नमक कानून तोड़कर हमारे स्वाधीनता आंदोलन में एक नई ऊर्जा का संचार किया था।

स्वामी दयानंद ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर आर्य समाज के आदर्शों का प्रसार किया। उन्हें अनेक अवसरों पर कड़े विरोध का सामना भी करना पड़ा था। अनेक स्थानों पर उनके विरुद्ध बल प्रयोग तक करने के लिए असामाजिक तत्वों को इकट्ठा किया जाता था। कई स्थानों पर कानूनी दांवपेंच भी लगाए गए। एक बार बनारस में रूढ़िवादियों ने मजिस्ट्रेट के पास जाकर उन्हें राजी कर लिया कि शांति भंग होने की आशंका के आधार पर स्वामी दयानंद के भाषणों पर रोक लगा दी जाए। स्वामी दयानंद को भाषण देने से रोकने के सरकारी आदेश की 'पायनियर और 'थियोसॉफिस्ट' अखबारों ने कड़ी आलोचना की और वह सरकारी आदेश रद्द किया गया। स्वामी जी के भाषण सफलतापूर्वक आयोजित किए गए और वे बहुत लोकप्रिय हुए। इस प्रकार, अनेक स्थानों पर स्वामी जी को विरोध का सामना करना पड़ा, लेकिन उनकी तर्क-शक्ति और समाज के हर व्यक्ति के कल्याण की उनकी दृष्टि का लोगों पर गहरा असर पड़ा और आर्य समाज की लोकप्रियता और शक्ति बढ़ती गई। यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि उन्नीसवीं सदी में ही स्वामी जी ने यह समझाया कि स्त्रियों के अधिकार पुरुषों के ही समान होने चाहिए। उनकी कार्य-शैली का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि आर्य समाज की स्थापना करने के बाद उन्होंने एक साधारण सदस्य के रूप में ही निरंतर कार्य किया और अध्यक्ष पद स्वीकार करने के आग्रहों को नहीं माना। उनकी प्रामाणिकता, सत्य-निष्ठा और आधुनिक सोच के बल पर आर्य समाज के आंदोलन ने ज़ोर पकड़ा और उत्तर भारत में तेजी से एक के बाद एक सैकड़ों आर्य समाज केन्द्रों की स्थापना हो गई।

स्वामी दयानंद सरस्वती का चिंतन और उनका सक्रिय योगदान भारत की परंपरा के प्रति गौरव की भावना पर आधारित है। उन्होंने भारतीय चिंतन की शक्ति को पहचाना और उसे व्यवहार जगत में प्रसारित किया। उनकी इसी विशेषता को व्यक्त करते हुए **गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर** ने कहा था- "मैं सादर प्रणाम करता हूँ उस महागुरु दयानंद को, जिसकी दिव्य दृष्टि ने भारत की आत्मगाथा में, सत्य-गाथा में, सत्य और एकता का बीज देखा।"

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि आर्य समाज के आदर्शों और क्रियाकलापों को आधुनिक युग में प्रासंगिक बनाए रखने के निरंतर प्रयास चलते रहते हैं। मुझे बताया गया है कि इस सम्मेलन में अंध-विश्वास निवारण, आधुनिकीकरण, भविष्य की चुनौतियों और जरूरतों, नारी सशक्तीकरण, आदिवासियों के कल्याण तथा प्राकृतिक आपदाओं के प्रबंधन जैसे विषयों पर विचार-विमर्श किया जाएगा। मुझे आशा है कि सौर ऊर्जा तथा वैकल्पिक ऊर्जा के अन्य स्रोतों के प्रयोग के लिए आर्य समाज भी प्रयास करेगा और इस तरह पर्यावरण संरक्षण को अपना योगदान देगा। समाज में आधुनिक विचारों को शक्ति प्रदान करना, महिलाओं को समुचित स्थान व शक्ति प्रदान करना, प्रगति का लाभ सभी वर्गों तक पहुंचाना, घरों-गाँवों-शहरों की स्वच्छता सुनिश्चित करना, पर्यावरण और विकास की चुनौतियों का सामना करना ऐसे महत्वपूर्ण मुद्दे हैं जिन पर सरकार के साथ-साथ समाज को भी सक्रिय भूमिका निभानी है। आर्य समाज जैसे संगठन ऐसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपना योगदान दे रहे हैं, यह प्रसन्नता की बात है।

यह शरद-कालीन उत्सवों का समय है। इस समय दिल्ली जैसे शहरों के वातावरण में प्रदूषण की वजह से सांस लेने की दिक्कतें बढ़ जाती हैं। बच्चों और बुजुर्गों पर इसका अधिक असर पड़ता है। सामाजिक संस्थाओं को लोगों में यह जागरूकता फैलानी चाहिए कि सभी त्योहार इस प्रकार मनाए जाएँ, जिससे पर्यावरण पर कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़े तथा शांति और सौहार्द बना रहे। आर्य समाज जैसे संस्थान इन कार्यों में अग्रणी भूमिका निभा सकते हैं। आज आर्य समाज की लगभग दस हजार इकाइयां देश-विदेश में मानव कल्याण के कार्यों में संलग्न हैं। नैतिकता पर आधारित आधुनिक शिक्षा तथा समाज के प्रत्येक वर्ग के, विशेषकर महिलाओं और वंचित वर्गों के उत्थान के लिए आर्य समाज ने प्रभावशाली योगदान दिए हैं। आर्य समाज ने देश में अनेक विद्यालयों और महाविद्यालयों की स्थापना की है। मुझे भी आर्य समाज द्वारा कानपुर में स्थापित एक संस्थान में उच्च-शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला। आर्य समाज से प्रेरित होकर मेरे पूर्वज भी आर्य समाज के आंदोलन में सहभागी रहे हैं। आर्य समाज ने नारी सशक्तीकरण के हित में देश के विभिन्न हिस्सों में कन्या-पाठशालाओं और उच्च-शिक्षण संस्थानों की भी स्थापना की है। इसी प्रकार आदिवासी क्षेत्रें में शिक्षा के प्रसार के लिए 'अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ' द्वारा स्कूल तथा कौशल विकास केंद्र चलाए जा रहे हैं जहां बच्चों को निशुल्क आवासीय शिक्षा प्रदान की जाती है। इस सेवाश्रम संघ द्वारा अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के उत्थान के लिए, उन्हें शिक्षा के माध्यम से, समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जा रहा है।

सन् 2024 में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की दो सौवीं जन्म-जयंती है। सन 2025 में आर्य समाज की स्थापना की एक सौ पचासवीं वर्षगांठ होगी। आधुनिक परिवेश में स्वामी दयानंद के दिखाए मार्ग पर चलना और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है। स्वामी जी समाज को मत-पंथ-संप्रदाय और जाति-पांति से मुक्त करते हुए मानव मात्र को 'आर्य' अर्थात 'श्रेष्ठ' बनाने के लिए आजीवन सक्रिय रहे और सबको प्रेरित करते रहे। इस कार्य को उसकी पूर्णता तक आगे ले जाना हम सभी का कर्तव्य है। स्वामी जी शांति-पाठ का महत्व समझाते थे। सभी जानते हैं, उस शांति-पाठ में यह प्रार्थना की जाती है कि सम्पूर्ण विश्व में, जल में, धरती में, आकाश में, अन्तरिक्ष में, औषधियों में, वनस्पतियों में शांति बनी रहे। शांति-पाठ में निहित यह कामना पर्यावरण संतुलन का आदर्श रूप है। आज 'क्लाइमेट चेंज' और 'ग्लोबल वार्मिंग' की चुनौतियों के सम्मुख इसी आदर्श को प्राप्त करने के लिए आर्य समाज जैसी संस्थाओं को निरंतर प्रयास करना है।

इस प्रकार, पर्यावरण के प्रति सजग और मानव-कल्याण के प्रति संवेदनशील तथा असमानता और अंध-विश्वास से मुक्त समाज की ओर बढ़ते हुए, आर्य समाज के सभी सदस्य, स्वामी दयानंद सरस्वती के आदर्शें के प्रति अपनी आस्था को साकार रूप प्रदान करेंगे। इस विश्वास के साथ, मैं 'अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन' के सभी प्रतिभागियों के तथा पूरे समाज के उज्ज्वल भविष्य की मंगल-कामना करता हूँ। **धन्यवाद**

जय हिन्द!

आर्ष साहित्य बिक्री केन्द्र

समस्त प्रकार का आर्ष साहित्य- वेद, उपनिषद, दर्शन, ऋषि प्रणीत ग्रन्थ, जीवन परिचय, सम-सामयिक साहित्य सहित पूर्वजन्म के श्रृंगी ऋषि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी का सम्पूर्ण साहित्य एवं ओ३म ध्वज, पट्टिकाएं, फोटो, कैलेण्डर तथा कैसेट आदि बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।

व्यवस्थापक- आर्यावर्त प्रकाशन

गोकुल विहार, अमरोहा (उ०प्र०)-२४४२२१

फोन : 05922–262033 / 09412139333

मुख्य पांड़ाल सहित १७ विभिन्न सभागारों में

चार दिनों तक निरंतर हुआ विविध कार्यक्रमों का सफल संचालन

इस अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में मुख्य पांडाल सहित १६ सभागारों में प्रतिदिन दो-तीन सत्रों में दिन भर रचनात्मक आयोजन किए जाते थे, जिनमें विशेष रूप से विभिन्न विषयों पर गोष्ठियां, शंका समाधान, वेद के विज्ञान पर शोधपरक उद्बोधन, यज्ञ विज्ञान, बच्चों की प्रतियोगिता, आर्य समाज के उत्थान पर गहन चिंतन-मनन, महर्षि दयानंद सरस्वती सहित अन्य अनेक महापुरुषों के प्रेरक जीवन चरित्रों पर आधारित चित्रदीर्घा-प्रदर्शनी, आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन, युवाओं को आर्य समाज के सोशल मीडिया से प्रशिक्षण देकर जोड़ने हेतु विशुद्धा सभागार आदि विशेष थे। इन सभी सभागारों के नाम आर्य जगत के महापुरुषों के नाम पर रखे गए थे, जिससे सम्मेलन में लाखों की संख्या में आए महानुभाव अपने महापुरुषों से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ सकें। प्रस्तुत है इन सभागारों पर एक संक्षिप्त रिपोर्ट-

आकर्षण का केन्द्र रहा मनमोहक व अद्भुत छटा से युक्त विशाल यज्ञ मण्डप- केसरी

गुरुदत्त विद्यार्थी सभागार

इस सभागार में विशेष रूप से सात वर्गों में बच्चे, किशोर, युवा और वृद्वजन, स्त्री-पुरुषों के लिए ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक प्रतियोगताओं का आयोजन किया गया, जिनमें भाषण, मंत्रपाठ, गीत, प्रश्नोत्तरी, सामूहिक गीत, चित्रकला, नारों का लेखन, वेद प्रश्नोत्तरी, लिखित पेपर, मौखिक काव्य पाठ आदि विशेष आयोजन थे, जिससे सैकड़ों हर आयु वर्ग के लोगों को अत्यधिक लाभ एवं प्रेरक प्रसन्नता प्राप्त हुई।

पं. रामचन्द्र देहलवी सभागार

इस सभागार में वैदिक धर्म के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा पर्ची पर लिखित शंकाओं का समाधान पाकर सैकड़ों लोगों ने लाभ प्राप्त किया।

स्वामी सत्य प्रकाश सभागार वेद-विज्ञान गोष्ठी कक्ष

इस सभागार में वेद, सत्यार्थप्रकाश और यज्ञ आदि वैदिक सिद्धांतों को जन सामान्य को समझाने के लिए विशेष रूप से प्रेजेंटेंशन प्रस्तुत की गई। अंधविश्वास कैसे पनपता है, श्रीकृष्ण एवं श्रीराम आदि महापुरुषों के जीवन चरित्रों से क्या शिक्षाएं मिलती हैं, इन सारगर्भित विषयों पर आधारित प्रेजेंटेशन विशेष आकर्षण का केंद्र रही, जिसके परिणामस्वरूप लोगों ने अपनी वैदिक संस्कृति और संस्कारों का परिचय प्राप्त किया।

शुक्रराज शास्त्री सभागार

इस सभागार में विभिन्न देशों से पधारे आर्यजनों के लिए आर्य समाज के विश्व व्यापी संगठन द्वारा अलग-अलग अनेक देशों में जो सेवा साधना की गतिविधियां प्रचलित है उन्हें उनकी ही विदेशी भाषाओं में विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसका लाभ यह हुआ कि अलग-अलग देशों में बसे आर्यजनों को परस्पर एक-दूसरे देश की संस्कृति के साथ आर्य समाज की विचारधारा के समन्वय और उत्थान की प्रेरणा प्राप्त हुई।

महात्मा नारायण स्वामी सभागार

इस सभागार में विदेशों से आए प्रतिनिधियों की वृहद गोष्ठियां सम्पन्न हुई और इसके साथ-साथ आर्य समाज के उत्थान के लिए विभिन्न विषयों पर विचार मंथन किया गया। जिसमें आयु, क्षेत्र, लिंग एवं जिम्मेदारियों के निर्वहन आदि पर विशेष रूप से चर्चा की गई।

पं. आशानंद जी की मैजिक लालटेन-(मूवी हॉल विचार टी.वी.)

इस सभागार को मूवी हॉल-विचार टी.वी. नाम से अलंकृत किया गया था। यहां पर निरंतर महर्षि दयानंद सहित अन्य महापुरुषों के प्रेरक जीवन एवं समाज उपयोगी विषयों पर स्क्रीन लगाकर लघु फिल्मों का प्रसारण किया गया। जिससे बाल, वृद्ध और युवा हर आयु वर्ग के लोगों को वेद, दयानंद और आर्य समाज की शिक्षाएं प्राप्त हुई।

विशुद्धा सभागार

इस सभागार में आर्य समाज के सोशल मीडिया का विशेष रूप से प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इसके साथ-साथ 'विश्वमार्यम्' प्रोजक्ट से लोगों को जोड़ने के लिए फॉर्म आदि भरवाए गए।

लोकनाथ वाचस्पति सभागार

इस सभागार में निरंतर धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम चलते रहे और उन प्रेरक प्रस्तुतियों को रिकार्ड भी किया गया, जिनमें आर्य समाज के ऐतिहासिक परोपकारी कार्य एवं घटनाओं सहित महापुरुषों के विचार देशभक्ति के सामूहिक गीत, एकल गीत, भोजन मंत्र, राष्ट्रीय प्रार्थना एवं ध्वजगान आदि का प्रसारण लगातार चलता रहा।

पं. फूलचन्द शर्मा सभागार

इस सभागार में 26 व 27 अक्तूबर 2018 को आर्य युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें कई आर्य युवक-युवतियों ने अपने जीवन साथी का चयन किया। बाकि 25 और 28 तारीक को विभिन्न भाषाओं में संगीत व भजन के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय सभागार

इस सभागार में विभिन्न विषयों पर वैदिक विद्वानों के द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किए गए, जिनमें हिन्दी भाषा का महत्व, प्राकृतिक चिकित्सा, वेदों की महिमा, ऋषि दयानंद के उपकार एवं शिक्षाएं, उपनिषदों की ज्ञान सम्पदा आदि अनेक अन्य विषयों पर वैदिक प्रवक्ताओं ने विशेष विचार प्रस्तुत किए, जिससे सैकड़ों लोग लाभन्वित हुए।

मोहनलाल मोहित सभागार

इस सभागार में विदेशों से आए प्रतिनिधियों के लिए संवाद की विशेष व्यवस्था की गई थी। जहां पर सभी विदेशी प्रतिनिधियों ने परस्पर आर्य समाज के उत्थान हेतु पूर्ण रूप से विचार-विमर्श किया। इस सभागार में केवल विदेशी प्रतिनिधियों को ही प्रवेश की अनुमति थी।

प्रदर्शनी सभागार

इस सभागार में एक दिव्य चित्र दीर्घा द्वारा जनसामान्य के लिए महर्षि दयानंद एवं उनकी शिक्षाओं पर आधारित सुंदर चित्र लगाए गए। जो अपने आप में एक विशिष्ट प्रदर्शनी के रूप में सिद्ध हुई। इसमें सत्यार्थप्रकाश के ताम्रपत्रों पर उकेरे हुए संस्करण विशेष आकर्षण का केंद्र रहे। इसके साथ-साथ महर्षि के जीवनवृत्त नशा, पशुवध, गौहत्या आदि अमानवीय कृत्यों से मुक्ति का संदेश प्राप्त हो रहा था, तो वहीं दूसरी और शाकाहार, आर्य समाज के दर्शनीय प्रेरक स्थल, स्मृति स्थल, विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश, डाक टिकटें, आर्य क्रांतिकारी एवं महापुरुषों के प्रेरणाप्रद चित्र आदि आर्य समाज की उपलब्धियों का संदेश दे रहे थे।

बालवीर हकीकत राय सभागार

इस सभागार में छोटे बच्चों के लिए नैतिक शिक्षा की एनिमेशन मूवीज, कॉमिक्स और खेल-खेल में उन्हें संस्कार देने की व्यवस्था की गई थी, जो अपने आप में बहुत कारगार साबित हुई। इस सभागार में छोटे बच्चों के लिए यह व्यवस्था विशेष रूप से इसलिए बनाई गई थी कि अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में बच्चों की भागीदारी का उन्हें पूरा लाभ मिल सके और वे आर्य समाज की वैदिक संस्कृति और महर्षि दयानंद की शिक्षाओं से परिचित हो सकें।

माता अमृताबाई सभागार

माता अमृताबाई सभागार अपने आप में एक अनूठा, अनुपम और अद्भुत सभागार सिद्ध हुआ। इसके पीछे अद्भुत सोच थी, अनूठी संवेदनशीलता थी और अनुपम महान विचार थे। जो आज से पूर्व हमने कहीं नहीं देखा। इस सभागार में छोटे बच्चों के साथ आने वाली माता-बहनों की पूरी सुविधा का ध्यान रखा गया था। जब बच्चा गोद में होता है, तब एक मां उसको लेकर के सारा दिन चलने वाले कार्यक्रमों को कैसे देख? कैसे सुने? बच्चा तो बच्चा है, वह कब शौंच और कब मूत्र कर दे यह किसी को भी पता नहीं होता। इसके साथ-साथ बच्चा कभी बोल कर नहीं बताता कि मुझे भूख लगी है। अत: इस सभागार में पोटी पाट से लेकर उनके दूधपान की पूर्ण व्यवस्था की गई थी। जहां पर एक मां अपने बच्चे को थोड़ा आराम भी करा सके और स्वयं भी आराम कर सके। दूध की बोतल धो सके इसके गर्म पानी की व्यवस्था थी। धन्य है आयोजक एवं विचारकर्त्ता जिन्होंने छोटी-छोटी से लेकर बड़ी-बड़ी महान सुविधाओं का सम्मेलन में इस तरह से ध्यान रखा जैसे कि आगुन्तक महानुभाव उनके अपने सबसे सगे और प्यारे रिश्तेदार थे।

गुरु विरजानंद सभागारे

इस सभागार में योग एवं ध्यान की विशेष वैज्ञानिक विधियों की चर्चा के साथ ही प्रशिक्षिण एवं अभ्यास सत्र आयोजित किए गए।

पं. लेखराम सभागार

इस सभागार में वैदिक विद्वानों की लिखित पुस्तकों का परिचय एवं लेखकों की विचार गोष्ठी के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

वेद में विज्ञान संगोष्ठी सभागार

इस सभागार में वैज्ञानिकों द्वारा यज्ञ विज्ञान पर शोध परक प्रस्तुति एवं यज्ञ विज्ञान से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा

ट्रैक्ट, लघु पुस्तक, संदर्भ ग्रन्थ, काव्य संग्रह तथा बहुरंगी पैम्फलेट, पोस्टर, विजिटिंग कार्ड आदि के प्रकाशन की उचित मूल्य पर सुविधा उपलब्ध है।

-व्यवस्थापक, आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, अमरोहा

मोबा. : 9412139333

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आर्यरत्न विश्व प्रसिद्ध एमडीएच के स्वामी

स्वागताध्यक्ष महाशय धर्मपाल ने दिया स्वागत भाषण

ये कहा महाशय जी ने

परमपिता परमात्मा के आशीर्वाद एवं अनुकंपा से आरंभ होने जा रहे आर्य समाज के इस विशाल अतंर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर विश्व भर से पधारे हुए आर्यजनों का इस महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष होने के नाते आप सबका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं।

महान वेदज्ञ, परम ईश्वर विश्वासी महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना मानव कल्याणार्थ की थी, उनके कार्यों को आगे चलाए रखने की जिम्मेदारी उन्होंने समस्त आर्यजनों को दी थी और हमारा सौभाग्य है कि हमारे पूर्वजों ने उस जिम्मेदारी को बेहतरी से निभाया है, तभी तो आज आर्यसमाज भारत एवं विश्व के अनेक देशों में फैला हुआ है और निरन्तर गतिशील संगठन रहते हुए आर्य समाज का प्रत्येक क्षेत्र में तथा प्रत्येक कार्य में विस्तार हुआ है तथा हो रहा है।

आज समस्त विश्व के आर्यजनों की यह सोचने की जिम्मेदारी बन जाती है कि हम सम्मिलित रूप से महर्षि दयानंद के सपनों को पूरा करने के लिए क्या कर पा रहे हैं और अभी हम कहां तक पहुंच पाए हैं?इन्हीं सब बातों पर समस्त विश्व के आर्यजन एक साथ बैठकर विचार कर सकें, इसी उद्देश्य से सन् 1927 से आर्य महासम्मेलनों की परम्परा का आरंभ हुआ और हम समस्त विश्व के अलग-अलग स्थानों में विशाल सम्मेलन आयोजित करके आज पुनः यहां दिल्ली में एकजुट हुए हैं।

मैं इस बात को समझता हूं कि लम्बी-लम्बी कष्टदायक यात्रा करके महासम्मेलन में आना कोई सरल कार्य नहीं है, पर एक सच्चे आर्य होने के नाते आपने इसे अपना कर्त्तव्य माना और अनेक कष्ट सहकर, घर के सुखों को भुलाकर आप यहां पधारे हैं। क्योंकि आपके अन्दर भी वो ही ज्वाला धधक रही है जो ऋषिवर देवदयानन्द सरस्वती जी ने प्रज्ज्वलित की थी।

मुझे याद आता है अपना बचपन जब मेरे पूज्य पिताजी मेरी उंगली पकड़कर आर्यसमाज सियालकोट ले जाते थे और फिर मेरी शिक्षा भी आर्यसमाज के विद्यालय में हुई। बचपन से जो दामन आर्य समाज का पकड़ा था, सो अभी तक दिल में आर्य समाज ही बसा हुआ है। ये ऋषिवर देव दयानंद जी के विचारों और परमपिता परमात्मा की कृपा का ही परिणाम है।

आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी सम्बोधन की मुद्रा में- केसरी

हम आर्यों ने उस स्वर्णिम काल को स्वयं अपनी इन आंखों से देखा है, जब जज साहब सिर्फ आर्यसमाजी व्यक्ति की गवाही से ही कोर्ट में फैसले दे दिया करते थे! सोचो, वह क्या युग था, नमस्ते करने वाले पर इतना विश्वास था, जिसकी सीमा नहीं। आज हमें इन सब बातों पर विचार तो करना ही है कि आर्य समाज को हम किस दिशा में लेकर जाएं।

आर्य समाजों के जलसों पर इतनी भीड़ हुआ करती थी कि मानो सारा शहर उमड़कर आ गया हो। आज जमाना बदल रहा है, हमें भी अपने आपको बदलना होगा तभी हम नए जमाने के साथ चल पाएंगे।

मुझे खुशी है यह कहते हुए कि हमने पिछले वर्षों में कई उत्साह जनक कार्य किये हैं जिनसे हम अपने पुराने संगठन को और अधिक मजबूत कर सकेंगे। आप सब जो दुनिया के कोने-कोने से आज यहां पधारे हैं उनके प्रयासों का ही यह परिणाम है।

मेरी उम्र 96 वर्ष की ओर है, इच्छा है कि आर्य समाज का स्वर्णिमकाल पुनः लाने के यज्ञ में मैं अपनी आहुति दूं । मुझे आप सब लोगों ने अवसर दिया ये मेरा सौभाग्य है । मैं आर्य समाज के भविष्य निर्माण के लिए कुछ विशेष कर सकूं, ऐसी शक्ति मैं परमपिता परमात्मा से मांगता हूं।

मैं ये सोचता हूं कि जब ये शरीर ही मेरा नहीं है तो बाकी सब कुछ मेरा कैसे होगा?अतः कुछ विशेष कार्य जो आर्य समाज की नींव को मजबूत कर सकें, वे हमें अभी करने हैं। आप सब लोगों के आशीर्वाद से जो संकल्प लिये हैं, चाहे वो आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा क्रांति अभियान हो, चाहे मीडिया केन्द्र हो, चाहे प्रतिभा विकास केन्द्र हो, परमपिता परमात्मा की कृपा से वे पूरे हों यही प्रभु से कामना है।

आप सब लोग जो इतनी संख्या में इस महासम्मेलन में पधारे हैं-महिलाएं, बच्चे, आर्यवीर-बुजुर्ग, विद्वान-महापुरुष, सभी ये विचारें कि हम आर्यसमाज को कैसे मजबूत करें, आर्य समाज के कार्यों में मेरा क्या योगदान होना चाहिए? मैं यहां से क्या शिक्षा और संकल्प अपने साथ लेकर के जाऊं । जैसे हमारे पूर्वजों ने इस आर्यसमाज की बगिया को लगाया और बड़ा किया उसी प्रकार मैं इसका और अधिक प्रचार-प्रसार कर सकूं। आपका ये संकल्प ही इस समारोह को सफल बनाने में सक्षम होगा। मैं पुनः समस्त विश्व से पधारे हमारे आर्यजन तथा भारत के कोने-कोने से पधारे हमारे आर्यजनों का इस महासम्मेलन में पधारने पर हार्दिक स्वागत करता हूं। समस्त विद्वानों का, सन्यासी महानुभावों का, भजनोपदेशकों का, समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों का, कार्यकर्त्ताओं का तथा लम्बे समय से इसके प्रयासों में जुटे दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों का बहुत-बहुत स्वागत, अभिनंदन।

ऋग्वेद
।। ओ३म् ।।
यजुर्वेद

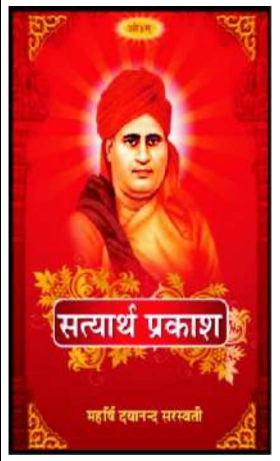

'सत्यार्थ प्रकाश'

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

● पहली बार सत्यार्थ प्रकाश की लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' व आर्यावर्त केसरी प्रकाशित किये जाएंगे। घोषित धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं हैं। ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी घोषित धनराशि भेजी जा सकती हैं। धन्यवाद

।। योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ।।

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं।
- न्यूनतम रु0 3100/- की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी।
- सभी महानुभाओं को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/- (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ निःशुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/-, 3100/-, 2100/-, 1100/- की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमशः 51, 31, 21, 11 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।

: प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8 वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 16 प्वाइंट
5. 'सत्यार्थप्रकाश के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे।
6. 'सत्यार्थप्रकाश' की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ है तथा इसका मूल्य 150/- प्रति ग्रन्थ है।

पता- डॉ. अशोक कुमार आर्य 'सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि', आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 09412139333, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद
अथर्ववेद

सत्यार्थ प्रकाश
का एक और
नवीन संस्करण
प्रकाशित
साइज़ - 18 x 23 x 8
मूल्य- अजिल्द- 60
सजिल्द- 70
दानदाताओं तथा सहयोगी महानुभावों के चित्र प्रकाशन की सुविधा। जन-जन तक पहुंचाएं ऋषिवर दयानन्द का यह क्रान्तिकारी ग्रन्थ

आर्यों का अद्वितीय महाकुंभ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

समस्त आर्यजगत उस समय भावविभोर हो गया जब दिल्ली में आयोजित आर्यों के महाकुंभ में उसे सहभागिता का अवसर मिला। विश्वशांति के संदेश के साथ भारत की राजधानी दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रिय आर्यमहासम्मेलन सम्पन्न हुआ। यह सम्मेलन अनेक मधुर यादों के साथ अपनी अमिट छाप छोड़ गया। महासम्मेलन में दुनिया के 32 देशों के आर्यप्रतिनिधियों के साथ लाखों की संख्या में आर्य कार्यकर्ताओं, आर्यविद्वानों, आर्यसन्यासियों तथा आर्यजनों ने भाग लिया। महासम्मेलन के उद्घाटन समारोह का शुभारंभ महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी के कर–कमलों के द्वारा हुआ। इस महासम्मेलन में विशाल भारत ही नहीं अपितु वैश्विक आर्यजगत के दर्शन हो रहे थे। आकर्षक प्रदर्शनियां, विशाल सभागार, अत्यन्त मनोहारी यज्ञ मण्डप, आर्ष साहित्य बेचने वाले विशाल एवं भव्य पण्डाल में स्थित बुक स्टॉल, स्वादिष्ट व्यंजनों से भरपूर विशाल एवं भव्य भोजनालय आदि–आदि हमेशा याद रहेंगे।

कार्यक्रम में देश के गृहमंत्री राजनाथ सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री सतपाल सिंह, गुरुकुल कुरुक्षेत्र के पूर्व कुलपति एवं हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत, केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री हर्षवर्धन, महाशय धर्मपाल, सिक्किम के राज्यपाल श्री गंगाप्रसाद, सांसद स्वामी सुमेधानन्द, उत्तरी दिल्ली नगर निगम महापौर आदेश गुप्ता, स्वामी धर्मानन्द, दिल्ली सभा प्रधान धर्मपाल आर्य, योग गुरु स्वामी रामदेव, केन्द्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी, आसाम के राज्यपाल जगदीश मुखी एवं सिक्किम के राजपाल गंगाप्रसाद, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर, हरियाणा सरकार में वित्तमंत्री कैप्टन अभिमन्यु, उत्तर प्रदेश बागपत से सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह, एमिटी युनिवर्सिटी के संस्थापक अध्यक्ष श्री अशोक चौहान जे.बी.एम.ग्रुप अध्यक्ष एस. के. आर्य, सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य, सार्वदेशिक सभा के महामंत्री प्रकाश आर्य, दिल्ली सभा महामंत्री विनय आर्य, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, आचार्य बालकिशन, प्रथम अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा, आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के महामंत्री भुवनेश खोसला, आर्यनेता गिरीश खोसला, हालेंड से पधारें सुरेन महाबली, डॉ महेश विद्यालंकार, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, सुरेन्द्र कुमार रैली, डॉ0 विनय विद्यालंकार, आचार्या नंदिता, दिल्ली विधानसभा के प्रतिपक्ष नेता विजेन्द्र गुप्ता, दिल्ली प्रदेश के शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया, भाजपा सांसद मनोज तिवारी, सीकर के सांसद स्वामी सुमेधानंद, स्वामी देवव्रत समेत देश–विदेश की अनेक नामचीन हस्तियों ने अपने प्रेरक संदेश से आर्यजनों का मार्ग प्रशस्त किया।

आर्य वीर दल के आर्य वीरों ने भजन ''बिगुल बजा आज आर्यो वीरों फिर हुंकार भरों, ऋषि की जय–जयकार करो'' से शुरुआत की तत्पश्चात अफ्रीकी बच्चों द्वारा मंच पर यज्ञ का आयोजन हुआ। इस सुंदर कार्यक्रम से समूचा पंडाल भावविभोर हो गया।

महासम्मेलन में योग, यज्ञ, धार्मिक गीतों, देशभक्ति से परिपूर्ण नाट्य मंचन के बीच मंच पर देश के अनेकों समाजसेवी और राजनीति से जुड़ी हस्तियाँ उपस्थित रहीं। ने मंच साझा किया।

यह महासम्मेलन एक अमिट यादगार बनकर सदैव हमारा पथ प्रशस्त करता रहेगा और आगे आने वाली संततियों को कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का एक महान संदेश देने में सफल सिद्ध होगा। अब देखना यह है कि सन् 2024 में जब महर्षि दयानन्द की 200वीं जन्म जयंती के साथ दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन होगा तो उसकी भव्यता कैसी होगी। महर्षि दयानन्द सरस्वती की दुनिया को विशेष देन है। सारा संसार आज उस युग प्रवर्तक महर्षि के प्रति नतमस्तक है। महर्षि दयानन्द के रचनात्मक आन्दोलन से सारा संसार जुड़ेगा, ऐसी आशा है। आगे आना वाला युग कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का युग होगा, ऐसा विश्वास है। आवश्यकता सघन प्रयासों तथा संकल्पशीलता की है। आओ हम सब मिलकर वैदिक उद्घोषों से सारे परिवेश को गुंजित करें और पुनः भारत को विश्व गुरु के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए आर्य समाज की शरण में आएं।

अतिथि सम्पादकीय– अर्जुन देव चढ्डा,
जिला प्रधान, आर्यसमाज, कोटा

संग्रहणीय है आर्यसमाज की विचारधारा

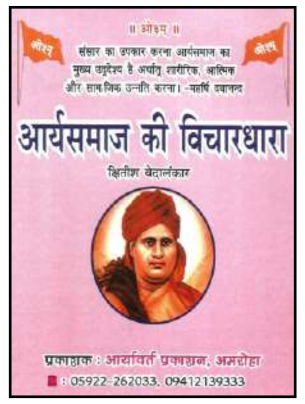

आर्यजगत के विद्वान क्षितीश वेदालंकार ने इस लघु पुस्तिका में 'आर्यसमाज की विचारधारा' को आसानी से समझ में आ सकने वाली शैली में प्रस्तुत किया है। इससे आर्यसमाज के सम्बन्ध में प्रचारित बहुत सी निरर्थक बातों का समाधान होता है। लेखक ने आर्यसमाज की बहुआयामी विचारधारा पर प्रकाश डाला है। यह पुस्तक पठनीय, संग्रहणीय तथा प्रसारणीय है। वार्षिकोत्सवों विभिन्न अनुष्ठानों, बोध एव वेद प्रचार सप्ताह आदि में इसे प्रचुर मात्रा में वितरित किया जाना चाहिए।

पुस्तक का नाम : आर्यसमाज की विचारधारा
लेखक : क्षितीश वेदालंकार, **कुल पृष्ठ संख्या :** 16, **मूल्य :** 5/-
पुस्तक प्राप्ति का पता : डॉ0 अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ0प्र0)- 244221, दूरभाष- 9412139333

महर्षि दयानन्द की विशेषताएं

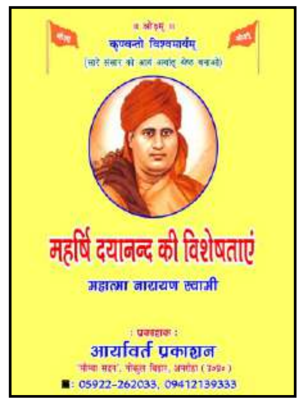

आर्यजगत के तपस्वी साधक महात्मा नारायण स्वामी ने अपनी लघु पुस्तिका **'महर्षि दयानन्द की विशेषताएं'** के माध्यम से महर्षि के गौरवमयी कृतित्व पर प्रकाश डाला है ताकि आने वाली पीढ़िया उनके महान योगदान से परिचित होकर अपनी उत्कृष्ट सभ्यता व संस्कृति तथा प्राच्य भारत की महान विरासत पर गर्व कर सकें। इस पुस्तक में महर्षि दयानन्द द्वारा किये गये एवं विलक्षण कार्यों का उल्लेख किया गया है। यह पुस्तिका पठनीय तथा संग्रहणीय है। इसे भी प्रचुर मात्रा में बांटकर राष्ट्र के नव निर्माण में योगदान देना चाहिए।

पुस्तक का नाम : महर्षि दयानन्द की विशेषताएं
लेखक : महात्मा नारायण स्वामी, **पृष्ठ :** 12, **मूल्य :** 8/-
पुस्तक प्राप्ति का पता : डॉ0 अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ0प्र0)- 244221, दूरभाष- 9412139333

साहित्य समीक्षा : नियमित स्तम्भ

आर्यावर्त केसरी के इस नियमित स्तम्भ में आर्य जगत के विद्वान लेखकों तथा रचनाकारों की बहुमूल्य कृतियों की समीक्षाएं प्रकाशित की जाती हैं ताकि उनके विषय में जिज्ञासु पाठकों, मननशील शोधार्थियों, मनीषियों तथा विभिन्न धार्मिक सामाजिक, सांस्कृति व शैक्षणिक संस्थाओं को उपयोगी जानकारी मिल सके। इस दृष्टि से इस स्तम्भ में विद्वान, रचनाकारों तथा प्रकाशकों की कृतियों का स्वागत है। एतदर्थ उनसे अनुरोध है कि किसी भी पुस्तक की समीक्षा हेतु उसकी न्यूनतम दो प्रतियां अग्रांकित पते पर भेजने का कष्ट करें। धन्यवाद,

डॉ. बीना रुस्तगी, साहित्य सम्पादक, आर्यावर्त केसरी,
आर्यावर्त कॉलोनी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा–244221

योग भगाए रोग

दीर्घ नौकासन

विधि :–

1. शवासन में लेटकर दोनों हाथों को सिर के पीछे मिलाते हुये सीधा कर दें।

2. श्वास अन्दर भकर पैर, सिर एवं हाथ तीनों धीरे–धीरे ऊपर उठाइए। नितम्ब एवं पीठ का निचला भाग भूमि पर लगा रहे, वापस आते समय श्वास छोड़ते हुए धीरे–धीरे हाथ, पैर एवं सिर को भूमि पर टिकाइए।

आओ योग करें

इस स्तंभ के अन्तर्गत योग-ऋषि स्वामी रामदेव जी द्वारा प्रस्तुत योग संबन्धी सामग्री नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही है। आशा है कि इस स्तम्भ से पाठकगण लाभान्वित होंगे और योग को अपनी जीवनशैली बनाकर 'योग युक्त विश्व- रोग मुक्त विश्व' की ओर उद्यत होंगे। -सम्पादक

लाभ :– नौकासान के समान ही पेट तथा पीठ के लिए लाभप्रद है।

हमारे जीवन में योगासन तथा प्राणायाम का विशेष महत्व है। हमें नियमित रूप से इनका अभ्यास करना चाहिए। इससे शरीर निरोगी रहता है तथा व्यक्ति दीर्घायुष्य को प्राप्त करता है। प्रातःकाल की बेला में हम नियमित रूप से योगाभ्यास तथा प्राणायाम करने का संकल्प लें।

– संपादक

आर्य समाज के व्यापक प्रचार-प्रसार से होगा कल्याण

आर्यजगत के मुर्धन्य संन्यासी, स्वामी सुमेधानंद जी सांसद सीकर राजस्थान ने आर्यजनों को आशीर्वाद देते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की अनुशासित सुव्यवस्थाएं प्रशंसनीय है। यहां चार दिनों तक विद्वान-संन्यासियों के मार्गदर्शन से जो आर्यजनों को लाभ मिला है वह बिल्कुल मोबाईल को रिचार्ज करने जैसा है। नई ऊर्जा, नया उत्साह और बौद्धिक दृष्टि से जो ज्ञानसंपदा यहां पर प्राप्त हुई है, उसका हम सब अपने-अपने क्षेत्र में सदुपयोग करें। महर्षि दयानंद जी की शिक्षाओं को तथा आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाएं। महर्षि दयानंद के विचारों की आवश्यकता जितनी उनके समय में थी, उससे ज्यादा जरूरत आज है। अंधविश्वास और पाखंड ने चारों तरफ पैर फैलाये हुए है। युवाओं को संस्कार देने की बहुत जरूरत है। खान-पान, रहन-सहन और व्यवहार लगातार बिगड़ता जा रहा है। आर्यवीर दल और गुरुकुलों के माध्यम से हम युवाओं को सही दिशा प्रदान करें। यहां 32 देशों के लोग आए है। लेकिन दुनिया बहुत बड़ी है। आर्य समाज को अभी भारत के भी कई स्थानों पर प्रचार करने की बहुत जरूरत है।

केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह को वेद भेंट करते हुए। साथ में मंचासीन हैं महाशय धर्मपाल जी एवं सिक्किम के महामहिम राज्यपाल गंगा प्रसाद जी- केसरी

केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने कहा

सन् 2024 मनाएंगे महर्षि दयानंद की 200वीं जन्म-जयंती वर्ष के रूप में

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि देश-विदेश से आये हुए आर्य बहनों एवं भाईयों मैं आप सबको शीश झुकाकर नमन करता हूं तथा आप सबका हार्दिक अभिनंदन करता हूं। मुझे बोलने के लिए आमंत्रित करते हुए श्री विनय जी ने कहा की गृहमंत्री जी ने सम्मेलन आकर हमें उपकृत किया है। किंतु मैं आप सबको बता देना चाहता हूं कि मैंने नहीं बल्कि आर्य समाज ने मुझे यहां बुलाकर उपकृत किया है। मैं आप सबको अपने हृदय के भावों से अवगत कराना चाहता हूं कि चाहे मेरी कितनी भी व्यवस्तताएं क्यों न होती, मैं आर्य समाज के आमंत्रण पर अपने समस्त कार्यक्रम निरस्त करके भी इस महान सम्मेलन में अवश्य आता। आर्य समाज और महर्षि दयानंद के प्रति मेरे मन में अत्यंत श्रद्धा का भाव है क्योंकि उन्होंने मानव समाज के ऊपर बहुत बड़े उपकार किए हैं।।

गृहमंत्री जी ने अपने उदबोधन में कहा- भारतीयता ही भारत की ताकत है। भारत की सांस्कृतिक एकजुटता ही इसकी मजबूती है। भारत के ऋषियों ने ही सारे संसार के कल्याण की कामना की है। वसुधैव कुटुम्बकम का उद्घोष भारत के ऋषियों का ही है। इतना शांतिपूर्ण और अनुशासित कार्यक्रम देखकर मैं अभिभूत हूं और यहां से मुझे सात्विक ऊर्जा प्राप्त हो रही है। यहां इतनी बड़ी भारी विशाल आर्यों की संख्या होने के बावजूद भी किसी प्रकार की कोई आवाज या हलचल न होना ही अपने आपमें एक महान बात है। मैं इसे महर्षि दयानंद की शिक्षा और उनका प्रताप ही मानता हूं।

विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए श्री राजनाथ सिंह- केसरी

पिछले चार दिनों से लगातार यहां पर अनेक प्रेरणादायी कार्यक्रम आयोजित होते रहे। मैंने स्वयं भी देखा कि अफ्रीका देश की बच्चियों ने भी वेदमंत्रों का पाठ किया। इससे सिद्ध होता है कि महर्षि दयानंद का उद्घोष कृणवन्तो विश्वमार्यम् साकार हो रहा है। स्वामी दयानंद की ही देन है कि हमारी वैदिक यज्ञ परंपरा को उन्होंने जन-जन को बताया और पर्यावरण प्रदूषण से मुक्ति का साधन समाज को दिया। स्वामी जी दूरदृष्टा महान ऋषि थे। मैं माननीय प्रधानमंत्री जी से वार्ता करके यह निश्चित करूंगा कि सन् 2024 को महर्षि दयानंद जी के 200 वीं -जन्म जयंती को पूरे भारत में वर्षभर मनाया जाए। आर्य समाज की शिक्षण संस्थाएं और आदिवासी क्षेत्रों में हो रहे सेवा के काम अपने आप में अद्भुत हैं। श्री विनय जी ने मानवमात्र के कल्याण के लिए कुछ प्रस्ताव मेरे सामने प्रस्तुत किए। हम इन सभी प्रस्तावों पर विचार करेंगे और मैं कहना चाहता हूं कि जो भी भारतीय संस्कृति और संस्कारों के लिए उचित है, वही अपने कहा है और वो हम अवश्य करेंगे और विनय जी के समस्त बिंदु मानव कल्याण की ओर ही इशारा कर रहे हैं।

आदरणीय श्री राजनाथ सिंह जी ने अफ्रीकी मूल की बेटियों के साथ स्वयं कहकर चित्र खिंचवाया और बच्चियों को आशीर्वाद दिया।

देश-विदेश में प्रसारित होने वाले

आर्यावर्त केसरी

में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

आर्यावर्त केसरी वर्तमान में देशभर के कोने-कोने के साथ ही विश्व के अनेक देशों में प्रसारित हो रहा है। विज्ञापनदाताओं से अनुरोध है कि वे अपने व्यक्तिगत विज्ञापन, शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों के विज्ञापन आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित कराकर लाभ उठायें।

विज्ञापन दर इस प्रकार है-

पूरा पृष्ठ रंगीन, एक अंक का शुल्क- 12000/- रुपये
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/2 पृष्ठ का शुल्क- 6500/-
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/4 पृष्ठ का शुल्क- 3500/-

स्थाई अथवा एक बार से अधिक प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों पर विशेष छूट देय है।

-प्रबन्धक (विज्ञापन)- आर्यावर्त केसरी
निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)-244221
मोबा. : 9412139333, 8630822099
ई-मेल : aryawartkesari@gmail.com

आर्यावर्त केसरी प्रकाशन समूह

विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवा के लिए प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित हैं

विश्व भर में वेद के प्रचार-प्रसार व महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को घर-घर पहुंचाने को संकल्पित आर्यावर्त केसरी विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवा के लिए देश-विदेश से प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित करता है। आवेदन संक्षिप्त जीवनवृत्त के साथ दिनांक 28 फरवरी 2019 तक पहुंच जाने चाहिए। (आवेदन हिन्दी भाषा में ही स्वीकार किये जाएंगे)। पुरस्कार इस प्रकार हैं-

- **अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वैदिक हिन्दी भाषा व भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अमूल्य योगदान प्रदान करने पर- अन्तर्राष्ट्रीय आर्यरत्न पुरस्कार।**
- **राष्ट्रीय स्तर पर वेद के प्रचार-प्रसार, समाज-सेवा के लिए- राष्ट्रीय आर्यावर्त भूषण पुरस्कार।**
- **नि:शक्त, गरीब, अनाथ, व गुरुकुलों की उत्कृष्ट सेवा व दानशीलता के लिए- आर्यावर्त सौम्या दानवीरश्री पुरस्कार।**
- **वैदिक साहित्य के विद्वान लेखक, कवि व पत्रकार के लिए- आर्यावर्त कलमश्री पुरस्कार।**
- **युवा लेखक, कवि, गायक, पत्रकार, समाजसेवी के लिए- आर्यावर्त युवा गौरव पुरस्कार।**

आवेदन भेजने का पता : सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)-244221
☎ फोन : 05922-262033, 09412139333
ई-मेल : aryawartkesari@gmail.com

गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अंकित हुआ आर्य समाज का एकरूप महा यज्ञ

अब तक के समस्त महासम्मेलनों में सर्वश्रेष्ठ है यह अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन -स्वामी रामदेव

सार्वदेशिक एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा स्वर्ण जयंती पार्क सैक्टर-10 रोहिणी के विशाल प्रांगण में आयोजित चार दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के समस्त आयोजन-कार्यक्रम अपने आपमें अद्‌भुत प्रेरणा के स्तंभ सिद्ध हो हुए हैं । किंतु आर्य समाज द्वारा आयोजित एकरूप यज्ञ में 10000 याज्ञिकों द्वारा एक साथ मंत्रपाठ कर यज्ञ किया और यज्ञ की वैदिक प्राचीन भारत की परंपरा की याद ताजा हो गई। इस विराट विहंगम दृश्य को देखकर हजारों लोग भावविभोर हो गए।

इस यज्ञ के अवसर पर पूर्व परिवहन मंत्री और सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के महामंत्री डॉ. रमाकांत गोस्वामी का विशेष आशीर्वाद प्राप्त हुआ। पातंनजलि योगपीठ के संस्थापक स्वामी रामदेव, आचार्य बालकृष्ण, महाशय धर्मपाल जी सहित आर्य समाज की शिरोमणि सभाओं के अधिकारीगण तथा हजारों की संख्या में आर्यजन उपस्थित थे।

इसके साथ-साथ गोघृत से बने विशेष सोमरस द्वारा यज्ञ की अग्नि पर विशेष वैज्ञानिक प्रयोग का प्रदर्शन किया गया। जिसका प्रमाण शतपथ ब्राह्मण में मिलता है। केरल में महाशय धर्मपाल वेद रिसर्च फाउडेशन के माध्यम से 10000 घरों को अग्निहोत्री परिवार बनाने वाले श्री एम. राजेश जी को स्वामी रामदेव जी तथा महाशय धर्मपाल जी सहित अधिकारियों ने आर्य गौरव सम्मान प्रदान किया। यह यज्ञ गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रेकार्ड में अंकित हुआ और इसके साथ-साथ विश्व के करोड़ों लोगों के हृदय में भी अविस्मरणीय हो गया।

चार दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के समस्त आयोजन कार्यक्रम अपने आपमें अद्‌भुत और अविस्मरणीय हैं। किंतु 8500 यज्ञ कुंडों पर 10000 याज्ञिकों द्वारा यज्ञ का यह विराट विहंगम दृश्य देखकर हजारों लोग भावविभोर हो गए। इस विश्वस्तरीय यज्ञ के कुशल प्रबंधन को देखकर स्वयं विश्व विख्यात स्वामी रामदेव जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा- अब तक मैं 3 अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों में भागीदार रहा हूं, किंतु अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हुआ है। हम इसके साक्षी हैं, हमें अपार हर्ष है।

एकरूप यज्ञ केवल कीर्तिमान नहीं है अपितु महर्षि दयानंद की प्रेरणा का साकार रूप है

इस अवसर पर एकरूप यज्ञ के विहंगम दृश्य को देखकर स्वामी जी ने गद-गद होते हुए अपने उद्‌बोधन में कहा कि केरल में 3100 कुण्डीय यज्ञ का सफल आयोजन श्री राजेश जी के द्वारा संभव हुआ था। किंतु यह उस आयोजन से बहुत बड़ा और विशाल है। आचार्य बालकृष्ण जी के माध्यम से गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में यह मनोहारी दृश्य विश्व के इतिहास में अंकित हो गया है। किंतु यह केवल कीर्तिमान ही नहीं है बल्कि यह तो यज्ञ की विशाल और अद्‌भुत शोभा और महर्षि दयानंद की प्रेरणा है, जो साकार हो रही है।

यज्ञ के बड़े-बड़े आयोजन हमने बहुत देखे किंतु इतना बड़ा यज्ञ का ऐतिहासिक दृश्य पहली बार देखा

10000 याज्ञिक कतारबद्ध अनुशासित, व्यवस्थित होकर अपने-अपने आसन पर विराजमान थे। सभी की वेशभूषा शुद्ध और सात्विक थी। सबके सामने एक समान तांबे के हवन कुंड और यज्ञपात्र सौभायमान थे। शुद्ध घी, सामग्री, समिधाएं, माचिस, कपूर और रूई की बत्ती सुनिश्चित स्थान पर रखी हुई थी। आचमन पात्र में जल था। यह अद्‌भुत दृश्य सबके मन को मोहित और प्रेरित कर रहा था। इस सारे दृश्य को देखकर योगगुरु स्वामी रामदेव जी अपनी चिरपरिचित भाषा भावशैली के अनुसार उदघोष करने के लिए विवश हो गये कि मैंने योग के बड़े से बड़े आयोजन किए हैं और कराए हैं लेकिन इतना बड़ा यज्ञ का ऐतिहासिक आयोजन मैं पहली बार अपनी आंखों से देख रहा हूं। यह सबका बहुत बड़ा सौभाग्य है। इसलिए दोनों हाथ उठाकर मेरे साथ बोलिए- महर्षि देव दयानंद की-जय। यह जयघोष स्वामी जी ने स्वयं अपने मुखारबिंद से तीन बार बुलवाया।

गौघृत से यज्ञ पर विशेष शोध का प्रदर्शन

यज्ञ की लगभग पूर्ण तैयारी हो चुकी थी। इसी बीच आर्य जगत के प्रसिद्ध आचार्य सनत कुमार जी ने गौ के शुद्ध देशी घी में दूध मिलाकर शतपथ ब्राह्मण के अनुसार सूर्य में ऊर्जा कैसे उत्पन्न होती है, इसका प्रदर्शन किया। जैसे ही उन्होंने यज्ञ की अग्नि पर गौघृत और दूध का मिश्रण आहूत किया तो अग्नि की लपटे दस फीट उपर तक उछलनें लगी। आचार्य जी ने सिद्ध किया कि अगर शुद्ध घी, दूध आदि पदार्थ उचित मात्रा में मिलाकर यज्ञ की अग्नि में अर्पित किए जाएं तो उससे सूर्य की किरणें किस तरह से प्रभावित हो सकती हैं।

घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ का उद्‌घोष कराया स्वामी रामदेव जी ने

यज्ञ करना और कराना आर्यों की दैनिक चर्या का प्रमुख अंग है। जिसके प्रचार-प्रसार के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने अभियान चलाया हुआ है। जब यज्ञ की बात चल रही हो तो इस महान सेवा प्रकल्प को क्यों न याद किया जाता?

सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने स्वामी रामदेव जी से स्वयं अनुरोध किया कि स्वामी जी आप घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ का उद्‌घोष करवाएं- स्वामी जी ने इस अवसर पर उपस्थित विशाल जनसमूह से पांच बार घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ का अपनी बुलंद आवाज में उद्‌घोष कराया। ज्ञात हो कि यज्ञ की यह मंगलकारी आवाज सम्मेलन में आए हुए 32 देशों के प्रतिनिधियों और टी वी पर हो रहे लाइव टेलीकाष्ट के माध्यम से विश्व के कोने-कोने तक पहुंच गई।

महाशय धर्मपाल जी एक यज्ञीय पुरुष हैं

इस विशाल यज्ञ के अवसर पर स्वामी रामदेव जी ने अपने मुखारबिंद से महाशय धर्मपाल जी को यज्ञीय पुरुष की संज्ञा से अलंकृत करते हुए अपने उद्‌बोधन में कहा कि महाशय जी इस अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन रूपी महायज्ञ के मुख्य यजमान हैं। आपका जीवन अनुकरणीय और प्रशंसनीय है।

अद्‌भुत मनोहारी दृश्य : 8500 यज्ञ कुंडों पर 10000 याज्ञिकों द्वारा यज्ञ का यह विराट विहंगम दृश्य देखकर भावविभोर हो गए हजारों लोग- केसरी

केरल के एम. राजेश को किया सम्मानित

एक रूप महायज्ञ के पावन पुनीत अवसर पर केरल राज्य में महाशय धर्मपाल वेद रिसर्च ऑफ फाउडेशन के माध्यम से वेद दयानंद और आर्य समाज को समर्पित एम.राजेश जी को राष्ट्रीय आर्य गौरव सम्मान से विभूषित किया गया। ज्ञात हो कि राजेश जी ने केरल में 10000 घरों को याज्ञिक परिवार बनाया है और आपकी आर्य समाज के प्रति समर्पित सेवाभावी निष्ठा और अतुलनीय योगदान अपने आपमें एक महान प्रेरणा है।

अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में स्वामी रामदेव जी सम्बोधित करते हुए- केसरी

मानव कल्याण एवं विश्व शान्ति एकता महायज्ञ में स्वामी रामदेव जी, आचार्य बालकृष्ण, प्रकाश आर्य व अन्य- केसरी

वैदिक संस्कृति के केन्द्र बिंदु हैं यज्ञ और योग : बालकृष्ण

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आयोजित एक रूप महायज्ञ को देखकर आचार्य बालकृष्ण जी विस्मित थे। उन्होंने कहा कि आज यह यज्ञ हम सबके दिलों में बस गया है। यह सदा के लिए अविस्मरणीय हो गया है। यज्ञ का यह वृहद आयोजन गोल्डन बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में अंकित हो गया। मनुष्य एवं प्राणीमात्र की रक्षा सहित पर्यावरण संरक्षण के लिए यज्ञ से बड़ा कोई श्रेष्ठ कार्य नहीं है। यज्ञ से ही मानव कल्याण के द्वार खुलते है। यज्ञ एक वैज्ञानिक विधा है जिससे पर्यावरण शुद्ध होता है और मानवमात्र का कल्याण होता है। स्वास्थ्य उत्तम बनता है, बुद्धि शुद्ध होती है, कर्मों में कुशलता आती है, मन प्रसन्न रहता है और सबका भला होता है-यज्ञ से। यह विशाल यज्ञ का आयोजन आर्यसमाज के इतिहास में एक नया अध्याय है। इसके समस्त आयोजकों, कार्यकर्त्ताओं और समितियों को मैं बधाई देता हूं। क्योंकि यज्ञ और योग हमारी वैदिक संस्कृति के मूल केंद्र बिंदु है। जिन्हें प्रचारित-प्रसारित करना सभी आर्यजनों का कर्त्तव्य और उद्‌देश्य होना चाहिए।

आचार्य बालकृष्ण जी सम्बोधन की मुद्रा में- केसरी

अवश्य पढ़ें

आज ही मंगाएं

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित विभिन्न संग्रहणीय व उत्कृष्ट पुस्तकें। कम से कम सौ पुस्तकें मंगाने पर विशेष छूट है।

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा द्वारा प्रमाणित १४ आर्यपर्वों से संबंधित एक विशेष पुस्तक
आर्य पर्व पद्धति
मूल्य : २० रुपये

महर्षि दयानन्द की विशेषताएं
मूल्य : ८ रुपये

आर्योद्‌देश्य- रत्नमाला
मूल्य : ८ रुपये

आर्य कन्या की सूझबूझ
मूल्य : ८ रुपये

आर्यसमाज की मान्यताएं
मूल्य : ८ रुपये

गौकरूणानिधिः
मूल्य : ८ रुपये

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में 21वें आर्य परिवार युवक–युवती परिचय सम्मेलन में मुख्य संयोजक अर्जुन देव चड्ढा व आचार्य वाचोनिधि आर्य के साथ विशिष्ट जन– केसरी

वैदिक वैवाहिक सिद्धान्तों का साकार रूप है युवक–युवती परिचय सम्मेलन –डॉ. वागीश

आर्य संस्कार से युक्त परिवारों के निर्माण का प्रक्रम हैं वैवाहिक परिचय सम्मेलन– वाचोनिधि आर्य

आर्य युवक–युवतियों ने दिया पूर्ण आत्मविश्वास के साथ परिचय

अर्जुन देव चढ्डा
नई दिल्ली।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर स्वर्ण जयंति पार्क रोहिणी स्थित महासम्मेलन परिसर में 21वां आर्य परिवार युवक–युवति परिचय सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने बाताया कि 26 व 27 अक्टूबर को महासम्मेलन स्थल में निर्मित महर्षि दयानन्द नगर के सभागार– 9 में आर्य परिवारों के युवक–युवतियों के दो वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन में बड़ी संख्या में आर्य युवक–युवतियों ने आत्मविश्वास के साथ अपना परिचय मंच पर आकर प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि वाचोनिधि आर्य ने अपने उद्बोधन में कहा कि वैवाहिक परिचय सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य आर्य संस्कारों से युक्त परिवारों का निर्माण करना है जब पति और पत्नि दोनों आर्य मान्यताओं के अनुरूप जीवन जीने वाले होते है तो सन्तान भी अल्प प्रयासों में सस्कारवान बन जाती है।

कार्यक्रम का शुभारंभ ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के मंत्रोच्चर पूर्वक हुआ। मंच पर उपस्थित अतिथियों अन्तर्राष्ट्रीय वेदिक विद्वान डॉ. वागीश आर्य, अर्जुनदेव चड्ढा राष्ट्रीय संयोजक, श्रीमति विभा आर्या राष्ट्रीय सहसंयोजिका, सतीश चड्ढा उपाध्यक्ष, एस. पी. सिंह दिल्ली प्रांत, डॉ. दक्षदेव गौड़ इन्दौर, श्रीमति किरण आर्या, श्रीमति वीणा आर्या, आर. सी आर्य सहसंयोजक परिचय सम्मेलन ने इसका विधिवत शुभारंभ किया। पण्डित श्योराज वशिष्ठ ने मंचासीन समस्त अतिथियों का राजस्थानी पगड़ी एवं ओम् का पटका पहनाकर स्वागत किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. वागीश आर्य ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य परिवार युवक–युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन वैदिक वैवाहिक सिद्धान्तों का साकार रूप है। जिसका मुख्य आधार गुण कर्म स्वभाव के अनुरूप जीवन साथी का चयन करना है। सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष अर्जुन देव चड्ढा ने अपने सम्बोधन में कहा कि अबतक हुए सम्मेलनों के माध्यम से बड़ी संख्या में आर्य युवक–युवतियाँ परिणय सूत्र में बंध चुके है। इससे भावी संस्कृति आर्य संस्कार युक्त होगी और आर्य समाज का विस्तार होगा। सम्मेलन में संयोजिका विभा आर्या ने कहा कि जातीय भेदभाव से उपर उठकर भेदभाव समाज का निर्माण ही आर्य समाज का ध्येय रहा। इसके अतिरिक्त दक्षदेव गौड ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन हर्षप्रिय आर्य ने किया। जिसमें आर. सी. आर्य, वेदमित्र वेदिक, पण्डित श्योराज वशिष्ठ, नरदेव आर्य रावतभाट, लालचंद नागर बांरां एवं अभयदेव बूंदि ने सहयोग किया । कुछ अभिभावकों ने अपने पुत्र–पुत्रियों का बायोडाटा मंच पर आकर सबके सामने बताया। इस अवसर पर युवक–युवतियों के फोटो युक्त बायोडाटा की विवरण पुस्तिका सभी को निःशुल्क वितरित की गई। कार्यक्रम स्थल पर ही पूंछताछ, तत्काल रजिस्ट्रेशन आदि के काउण्टर लगाए गये थे।

आर्यावर्त केसरी के सदस्यों से विनम्र अनुरोध

आर्यावर्त केसरी के सभी सम्मानित सदस्यों से अनुरोध है कि उनकी वार्षिक सदस्यता अवधि नाम व पते की स्लिप पर अंकित रहती है। अतः स्लिप पर अंकित अवधि के अनुसार यथासमय अपना वार्षिक सदस्यता सहयोग भेजते रहा करें। जिन मान्य सदस्यों ने अभी तक अपनी वार्षिक सदस्यता–राशि जमा नहीं की है, वे कृपया मनीआर्डर द्वारा आर्यावर्त केसरी के पते पर भेजकर रसीद प्राप्त कर लें, ताकि उन्हें आर्यावर्त केसरी निरंतर मिलता रहे।

प्रबन्धक (प्रसार)– आर्यावर्त केसरी

टंकारा चलो

आर्यावर्त केसरी प्रबंध समिति के नेतृत्व में गतवर्षों की भांति अहमदाबाद, द्वारिका, पोरबंदर, सोमनाथपुरी व टंकारा आदि का परिभ्रमण कार्यक्रम २६ फरवरी से ०६ मार्च २०१९ तक

४ विस्तृत रूपरेखा पृष्ठ चार पर देखें।

आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित 'आर्यावर्त केसरी' के बचत खाता संख्या- 30404724002 (IFSC कोड : SBIN0000610) में जमा करा सकते हैं, अथवा चैक या धनादेश द्वारा भेज सकते हैं। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), दूर. -05922-262033, चल.- 09412139333

आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, हरिद्वार

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार/ प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित हैं

न्यास प्रतिवर्ष महात्मा आर्यभिक्षु (स्वामी आत्मबोध सरस्वती) के दीक्षा दिवस (जन्म दिवस) पर आर्य विद्वानों को सम्मानित करता है। इस वर्ष भी 31 जनवरी 2019 को सम्मानित किये जाने वाले वैदिक विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं के चयन हेतु हिन्दी में निम्न प्रकार प्रस्ताव आमंत्रित हैं–

1. स्वामी धर्मानन्द विद्यामार्तण्ड आर्यभिक्षु पुरस्कार (आर्य विद्वान के लिए)
2. ब्र. अखिलानन्द आर्यभिक्षु पुरस्कार (नैष्ठिक ब्रह्मचारी के लिए)
3. स्वामी आत्मबोध सरस्वती कर्मवीर पुरस्कार (श्रेष्ठ आर्य कार्यकर्ता के लिए)

प्रथम व द्वितीय पुरस्कार सामान्यतः उन विद्वानों, ब्रह्मचारियों को प्रदान किये जाते हैं, जिनकी कोई निश्चित आय नहीं होती। तृतीय पुरस्कार के लिए ऐसी कोई शर्त नहीं है। प्रत्येक पुरस्कार राशि रुपये 11,000/– (ग्यारह हजार मात्र) हैं। 31 दिसम्बर 2018 तक प्रस्ताव (आवेदन) प्रधान अथवा मंत्री, न्यास के नाम से, सम्पूर्ण विवरण सहित भेजने का कष्ट करें।

गिरधारी लाल चांदवानी
अध्यक्ष

प्रोफेसर महावीर अग्रवाल
मंत्री

हमेशा याद रहेगा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

डॉ. सत्यपाल सिंह जनसमूह को सम्बोधित करते हुए- केसरी

भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं मंत्री शपथ ग्रहण के समय अपने हाथों में रखें वेद- यह है मेरा सपना -डॉ. सत्यपाल सिंह, केंद्रीय मंत्री

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 के अवसर पर केंद्रीय मंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह ने अपने उद्‌बोधान में कहा कि चाहे आंतकवाद, भ्रष्टाचार अथवा कोई भी कुरीति या समस्या क्यों न हो समस्त समस्याओं का समाधान वेद और महर्षि दयानंद जी की शिक्षाओं से ही सम्भव है। महर्षि दयानंद के विचार और शिक्षाएं, वेदों का सार और संदेश है। विश्व का सबसे बड़ा शक्तिशाली राष्ट्र अमेरिका में भी जब वहां का राष्ट्रपति अपने पद की शपथ लेता है तो उसके एक हाथ में बाईबल होती है, जिसको साक्षी मानकर के वह शपथ ग्रहण करता है। मेरा भी यह सपना है कि महान भारत देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्री जब-जब अपने पद की शपथ लें तो उनके हाथों में भी वेद शोभायमान हो, क्योंकि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और वेद ज्ञान से ही मानव का कल्याण है। ज्ञात हो कि डॉ. सत्यपाल सिंह जी की अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की कई महत्त्वपूर्ण व्यवस्थाओं में अहम भूमिका रही है और डॉ. सत्यपाल जी की सम्मेलन के कई विशेष सत्रें में भागीदारी स्तुत्य एवं प्रशंसनीय है। आपने कई बार उद्‌बोधन देकर उपस्थित विशाल जनसमुह को गौरवान्वित किया है।

महिला उत्थान में महर्षि का अभूतपूर्व योगदान : मनोहरलाल खट्टर

हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्‌टर सम्बोधित करते हुए- केसरी

महासम्मेलन में हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर ने महर्षि दयानंद सरस्वती के महिला शिक्षा पर रोशनी डालते हुए कहा कि समाज में महिला शिक्षा के महत्व को महर्षि दयानंद सरस्वती ने बखूबी समझा। यही कारण है कि दयानंद ने महिला शिक्षा को प्रारंभ किया। आज भी महिलाओं को शिक्षा के साथ-साथ उन्हें शिक्षा और अधिकार दिलाने की आवश्यकता है। गर्भ में ही भ्रूण को खत्म किया जाता रहा था, इसलिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बेटी बचाओ-बेटी पढाओ नारे के साथ 22 जनवरी, 2015 को इस आंदोलन का आगाज किया। इस नारे के असर के बारे में पूरे देश के बारे में तो नहीं पता, लेकिन हरियाणा की जनता ने इस चुनौती को स्वीकार किया। यहां यह दर 850 से भी नीचे थी जो अब बढ़कर 931 तक जा पहुंचा है। केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह ने कहा कि दयानंद सरस्वती एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने कहा था कि वेदों के बिना देश का उद्धार नहीं हो सकता। उन्होंने ही देश की आजादी के लिए साम्राज्यवाद का नारा दिया। इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत, हरियाणा के वित्त मंत्री कैप्टेन अभिमन्यु, बीजेपी के वरिष्ठ नेता विजय गोयल, हिमांशु त्रिवेदी, स्वामी सुमेधानन्द, स्वामी विवेकानन्द आदि सहित कई जानी-मानी हस्तियों ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित किया।

शिक्षा के क्षेत्र से दूर हो अंधविश्वास -मनीश सिसोदिया

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में दिल्ली के उपमुख्यमंत्री एवं शिक्षामंत्री श्री मनीश सिसोदिया जी ने आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती का उपकार सम्पूर्ण मानवजाति पर है। अगर ऋषि दयानंद न होते तो मनुष्य नरभक्षी बनकर जीवन यापन करता। सत्यार्थ प्रकाश के विषय में उन्होंने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार-प्रसार अगर न होता तो अंधविश्वास को और बढ़ावा मिलता। शिक्षा के क्षेत्र में महर्षि दयानंद और आर्य समाज की देन सबसे बड़ी है।

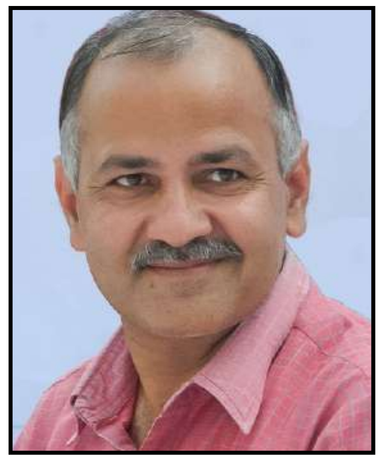

इस अवसर पर श्री सिसोदिया जी ने कहा कि अंधविश्वास और पांखड की जड़े स्कूलों में मजबूत हो जाती है। जब बच्चे परीक्षा देते समय अपनी साल भर की पढ़ाई पर इतना विश्वास नहीं करते जितना कि हनुमान चालीसा के पाठ पर करते है।

उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द ने शिक्षा पर विशेष बल दिया। वास्तव में बच्चों को अगर वहीं पर सही दिशा दी जाये तो उनके अंदर इस तरह का अंधविश्वास जन्म नहीं लेगा। इसके लिए हम प्रयासरत हैं और मैं आर्य समाज के प्रति कृतज्ञ हूं कि मुझे उन्होंने यहां आने का अवसर प्रदान किया।

भारत को विश्व गुरु और नया भारत बनाने के लिए सामर्थ्यवान और योग्यतम है आर्य समाज -डॉ. हर्षवर्धन केंद्रीय मंत्री

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर केन्द्रीय मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने कहा कि आयोजकों और आर्य समाज को मैं बधाई देता हूं। सन् 1927 में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय महाकुंभ भारत में हुआ था। इसके बाद अमेरिका, थाईलैंड, मारीशॅस, बर्मा, नेपाल आदि अनेक देशों से होती हुई यह पावन यात्रा पुनः भारत में और भारत में भी दिल्ली में महाकुंभ के रूप में हमारे सामने है। मैं इस महान सम्मेलन की सात्विक तरंगों को हृदय में महसूस कर रहा हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि ऐसे विराट आयोजन आर्य समाज के द्वारा विश्व के हर देश में आयोजित हों। क्योंकि विश्व का कल्याण आर्यों के ऐसे महाकुंभों से ही सम्भव है। इस सम्पूर्ण विश्वस्तरीय दृश्य में मुझे व्यक्ति नहीं सम्पूर्ण भारत और विश्व दिखाई दे रहा है। भारत को विश्व गुरु और नया भारत बनाने के लिए सामर्थ्यवान और योग्यतम है- आर्य समाज। महर्षि दयानंद का सत्यार्थप्रकाश एक शाश्वत संदेश प्रदान करता है। महर्षि दयानंद की प्रेरणा से ही जातिवाद और छुआछूत जैसी बीमारियों का समापन हुआ था। आर्य समाज के संस्थापक की कृपा से ही ग्यारवीं कक्षा से मैंने भी अपने नाम से गोत्र और जातिसूचक शब्द हटा दिया था। महर्षि दयानंद और आर्य समाज के सामने मैं नतमस्तक हूं। वेद ज्ञान के प्रचार के लिए मैं सदा प्रयासरत रहूंगा।

घर-घर पहुंचाएं सत्यार्थ प्रकाश

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पेयजल की थी समुचित सुंदर व्यवस्था

जल ही जीवन है, जल है, तो कल है, ऐसे प्रेरक वाक्य हर किसी ने सुने होंगे। अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आर्यजनों की हर तरह की सुविधा का पूरा ध्यान रखा गया था, किंतु पेयजल की व्यवस्था का कोई जवाब नहीं रहा। तीन किलोमीटर लंबी पाईप लाईन बिछाई गई, चौबीस स्थानों पर बनाए गए थे, पानी पीने के प्लेटफार्म जिनमें से शुद्ध पेयजल लगातार प्राप्त होता रहा और सभी आगुन्तक महानुभावों की प्यास बुझाता रहा। इसके साथ-साथ पांच रूपए में शुद्ध, स्वच्छ पानी की बोतल प्रवेश द्वार से लेकर विशाल सम्मेलन स्थल में अनेक स्थानों पर प्राप्त हो रही थी। इस विशेष जल सुविधा से लोग इतने प्रसन्न हुए और कह उठे कि अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन इसी का नाम है, जहां अन्न-जल-आवास आदि हर तरह की सुविधा बेमिसाल है।

अब आप आर्यावर्त केसरी के नियमित स्तम्भों में निरन्तर पढ़ते रहेंगे महत्वपूर्ण सामग्री

इन स्तम्भों के लिए सचित्र सामग्री प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं

ये हैं आर्यावर्त केसरी के कुछ महत्वपूर्ण स्तम्भ

♦ ऐसे होते हैं आर्य, ♦ भारतवर्षीय गौशालाएं, ♦ प्रकाशित आर्ष साहित्य- पुस्तकों की समीक्षा, ♦ आर्य जगत की महान विभूतियां ♦ आर्य जगत के लोकोपयोगी न्यास (ट्रस्ट), ♦ आर्य जगत के गुरुकुल, ♦ आर्य जगत के प्रकाशक और प्रकाशन, ♦ आर्य जगत की ऐतिहासिक धरोहर, ♦ आर्य जगत के क्रांतिवीर- अमर सेनानी- शहीद, ♦ आर्य जगत के मूर्धन्य प्रवक्ता व तपस्वी सन्यासी वृन्द, ♦ आर्य जगत के भजनोपदेशक, ♦ आर्य जगत द्वारा संचालित प्रकल्प, ♦ आर्य जगत की शिक्षण संस्थाएं और काव्यजगत, योग भगाये रोग, खानपान और स्वास्थ्य जैसे अन्य कई नियमित कॉलम।

कृपया उपर्युक्त स्थाई कॉलमों (स्तम्भों) के लिए सचित्र सामग्री भेजें प्रकाशनार्थ। साथ ही, अपने प्रियजनों को दें जन्म दिवस आदि की हार्दिक शुभकामनाएं तथा दिवंगत दिव्यात्मनों का करें भावपूर्ण स्मरण।

आर्यावर्त केसरी के इस अत्यन्त व्यय साध्य, समय साध्य व श्रम साध्य प्रकाशन यज्ञ में आपकी तन-मन-धन से सहयोग रूपी पावन आहुति भी सादर निवेदित हैं। मंगलकामनाओं सहित,

- डॉ० अशोक कुमार आर्य, सम्पादक (9412139333)

देश-विदेश के सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने सबका मनमोहा

वार्षिकोत्सव २६ से

नई दिल्ली। आार्य समाज ए ब्लाक, कालका जी नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव 26 से 29 दिसम्बर तक होगा। यह सूचना रमेश गाड़ी प्रधान ने दी। (सम्पर्क सूत्र- 26226176)

२२ से होगा आर्यसम्मेलन

कोलकाता। आर्य समाज, बड़ा बाजार, कोलकाता का वार्षिकोत्सव 22 से 30 दिसम्बर तक आयोजित होगा।

आगामी कार्यक्रम

- 21 से 23 दिसम्बर 2018- सामवेद पारायण यज्ञ, पल्लवपुरम् (मेरठ)
- 24 से 25 दिसम्बर 2018- सामवेद पारायण यज्ञ, कचहरी रोड, मेरठ।
- 2 से 3 जनवरी 2019- वेदपारायण यज्ञ, ग्राम मण्डावली, बिजनौर।
- 9 से 10 फरवरी 2019- स्वस्ति यज्ञ, कोटा।
- 13 से 20 फरवरी 2019- चतुर्वेद पारायण यज्ञ, ग्राम सुआहेड़ी (बिजनौर)।
- 1 से 8 मार्च 2019- चतुर्वेद पारायण यज्ञ, ग्राम मुलसम, जि0- बागपत।

वैदिक सत्संग शिविर २१ से

भुज। 20 से 21 दिसम्बर तक वैदिक सत्संग शिविर भुज, कच्छ में स्वामी शान्तानन्द द्वारा, 22 दिसम्बर को काला डूगर, सफेद रण आदि कच्छ के प्रसिद्ध दार्शनिक स्थल का भ्रमण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। (शिविर शुल्क 1000 रु0। भ्रमण मार्ग व्यय अतिरिक्त।)

२२ को मनेगा मकर संक्रान्ति पर्व

नोएडा। आचार्य दार्शनेय लोकेश के ब्रह्मत्व में 22 दिसम्बर को उनके निवास- सी-276, गामा प्रथम में सूर्य के उत्तरायण के अवसर पर मकर संक्रान्ति के अवसर पर यज्ञ आयोजित किया जा रहा है।

वार्षिकोत्सव २४ से

गंगापुर सिटी। 24 से 30 दिसम्बर तक आर्यसमाज गंगापुर सिटी (राज0) का वार्षिकोत्सव मनाया जाएगा, जिसमें आचार्या नन्दिता शास्त्री, कमलापति शास्त्री व शिवकुमार वक्ता होंगे।

वार्षिकोत्सव २८ से

पल्वल। आर्य समाज पलवल का वार्षिकोत्सव 28 दिसम्बर से 2 जनवरी तक हुड्डा चौक पलवल में होगा। इस अवसर पर वेद रक्षा, गौ रक्षा, राष्ट्र रक्षा तथा महिला सम्मेलन सहित अनेक सम्मेलन आयोजित किये जायेंगे।

संजीव रूप द्वारा भक्ति संगीत कार्यक्रम

हापुड़। आर्य समाज में 2 से 6 दिसम्बर तक संगीतमय दिव्यज्ञान कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आचार्य पं0 संजीव रूप द्वारा भक्ति संगीत की सरिता प्रवाहित हुई।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में देश-विदेश से पधारीं अनेक हस्तियाँ

केन्द्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी बोलते हुए- केसरी

सर्वश्रेष्ठ है महर्षि दयानंद की विचारधारा-नितिन गडकरी

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भारत की विरासत को सुरक्षित और संपोषित करने के लिए भारतीय संस्कृति और संस्कारों पर गहन चर्चा लगातार जारी रही है। जो कि अपने आप में समुचे देश और विश्व के लिए शुभ संदेश है। स्वामी दयानंद जी के विचार भारत को विश्वगुरु बनाने के थे। इसलिए स्वामी जी ने जातिवाद, छुआछूत और अस्पृश्यता से मुक्त भारत की कल्पना की थी। स्वामी जी का संदेश, उपदेश सुखी, समृद्ध और प्रगतिशील भारत का था। आज हमारे देश के विषय में कहा जाता है कि भारत देश धनवान है और वहां की जनता गरीब है। किंतु हम उन्हें बताना चाहते हैं कि हमारी संस्कृति और संस्कारों की डोर इतनी मजबूत है कि यहां पर गरीब होने पर भी मानवीय सिद्धांत और मान्यताओं से कभी समझौता नहीं किया जाता। क्योंकि हमारे यहां ऋषि-मुनियों की कृपा दृष्टि सदा से रही है। महर्षि दयानंद सरस्वती की मूल्य दृष्टि में संस्कार, संस्कृति, जीवनपद्धति और परिवार के लिए सुख-शांति से युक्त जीवन व्यापन करने का संदेश था। लेकिन देश सेवा और मानव सेवा को सर्वप्रथम मानते थे। वेद की आज्ञाओं के अनुसार ही जीवन यापन करना उन्होंने श्रेष्ठ माना। महर्षि दयानंद की शिक्षाएं पूरे संसार के लिए अनुकरणीय और वंदनीय हैं।

भारतोन्नति के हर क्षेत्र में अनुपम है आर्य समाज का योगदान

-प्रो. जगदीश मुखी, राज्यपाल असम

सन् 1958 में मैं आर्य समाज से जुड़ा था। आर्य समाज से ही मुझे राजनीतिक क्षेत्र में सेवा करने की प्रेरणा प्राप्त हुई। गौहत्या सत्याग्रह में मैंने कविता पाठ किया था और गौहत्या पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगे ये हमने उस समय आग्रह किया था। आर्य समाज का इतिहास मानवसेवा का इतिहास रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज की देन बड़ी अद्भुत है। आज भी बड़ी-बड़ी संस्थाओं के मालिक, जज, गर्वनर, मंत्री आदि श्रेष्ठ पदों पर आर्य समाज के गुरुकुल तथा डी.ए.वी शिक्षण संस्थाओं से पढ़े हुए लोग विराजमान हैं। ऊंचे से ऊंचे पदों पर बैठे हुए लोग आर्य समाज की शिक्षा के क्षेत्र में सेवा का ही परिणाम है। आर्य समाज और महर्षि दयानंद के विचारों से प्रेरित होकर ही अण्डमॉन निकोबार में जब मैं राज्यपाल था तो वहां मैंने लॉटरी खेलने पर प्रतिबंध लगाया, गुटखा, तंबाकू बंद करवाए और आज कई राज्यों में शराब जैसी बुराईयों को दूर करने का कार्य हो रहा है तो यह आर्य समाज और महर्षि दयानंद की ही देन है। आर्य समाज और महर्षि दयानंद के विचारों पर चलकर ही भारत विश्वगुरु बन पाएगा।

कोई न देख सका पूरा सम्मेलन

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन स्थल अजमेरी गेट दिल्ली रामलीला मैदान के क्षेत्रफल 5.25 लाख स्कवेयर फीट से लगभग सात गुना बड़ा 33 लाख स्कवेयर फीट था। इतने बड़े क्षेत्रफल में आयोजित आर्यों के इस विशाल महाकुंभ को संपूर्ण रूप से देखने में कोई भी व्यक्ति सफल नहीं हो सका। सारे स्थानों को कोई देखता भी तो कैसे देखता, एक तो आर्यजनों की भव्यता, विशालता और उपयोगिता और गुणवत्ता इतनी व्यापक थी जो व्यक्ति जहां पर एक बार बैठ जाता वह वहीं का होकर रह जाता था। अगर कोई व्यक्ति कोशिश भी करता तो उसके मिलने वाले उसे रास्ते में घेर लेते और वे अपने साथ सभागारों से लगाई गई प्रदर्शनी, शंका समाधान कार्यक्रम आदि आर्यजनों में ले जाने, फिर मुख्य पांडाल, में चले जाते, भोजनालय में जाते तो वहां की व्यवस्था को देखते ही रह जाते, इस तरह से सुबह से शाम हो जाती और व्यक्ति आनंद मनाते हुए अगले दिन पूरे सम्मेलन का दर्शन करूंगा सोचते हुए अपने आवास की ओर बढ़ जाता। अगले दिन दिव्य यज्ञशाला, सार्वकालिक यज्ञशाला, गौशाला के दर्शन करने में रग जाता फिर मुख्य पांडाल में जाता और विद्वानों के सागर्भित प्रवचनों में (वो जाता) और तो क्या बात की जाए 26 अक्तूबर सायंकाल एक रूप यज्ञ का इतना भव्य आयोजन था, जिसे गोल्डन बुक ऑफ व्लर्ड रिकार्ड में अंकित किया गया, उसे भी सम्मेलन में मौजूद जन पूरी तरह से नहीं देख पाए। इससे ज्ञात होता है कि अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन कितना विशाल था।

ब्रह्मयज्ञ तथा देवयज्ञ और आर्य पर्वों पर केन्द्रित
एक श्रेष्ठ पुस्तक
आर्य पर्व पद्धति
(केवल 20/- में उपलब्ध)
आर्यावर्त प्रकाशन,
अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)
सम्पर्क- 9412139333
आज ही मंगाएं
अर्चना यज्ञ पद्धति
(केवल 12/- में उपलब्ध)
साथ ही अनेक अन्य महत्वपूर्ण संग्रहणीय पुस्तकें सूची मंगाएं

सभा प्रधान सुरेश चन्द्र आर्य का अध्यक्षीय उद्‌बोधन

संसार के कल्याणार्थ दयानन्द ने की आर्यसमाज की स्थापना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सरंक्षक तथा इस सम्मेलन के स्वागताधयक्ष आदरणीय महाशय धार्मपाल जी, मंच पर उपस्थित **समस्त संन्यासीवृन्द, सम्मानीय विद्वतजन,** समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान एवं मन्त्रीगण, एवं विदेशों में आर्यसमाज का नेतृत्व करने वाले सभी पदाधिकारीगण एवं प्रतिनिधिगण, उपस्थित अतिथिगण, वन्दनीया मातृशक्ति एवं आर्यभद्र पुरुषो!

भारतभूमि की ऐतिहासिक नगरी दिल्ली में आयोजित आर्यों के इस अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के आयोजन के अवसर पर विश्व के अनेक देशों से तथा भारत के कोने-कोने से पधारे बहनों-भाइयों एवम् आर्य समाज के समस्त अनुयायियों का मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आत्मीय अभिनंदन करता हूं-स्वागत करता हूं।

परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के शुभ संकल्प को लेकर आरंभ होने जा रहे इस विशाल व भव्य अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की सफलता की मैं कामना करता हूं।

बन्धुओ, विश्व में फैले घोर अन्धकार के युग में वेदों के प्रकाण्ड ज्ञाता महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने **मानव मात्र के कल्याणार्थ** सम्प्रदाय और मजहब से रहित ईश्वरीय ज्ञान को घर-घर तक पहुंचाने तथा कुरीतियों व अंधविश्वासों से हटकर समस्त मानव जाति को उन्नति के मार्ग पर चलने की प्रेरणा हेतु आर्य समाज की स्थापना की। सामाजिक हित में आर्यसमाज ने आरंभ से ही अपनी जिम्मेदारियों के निर्वाह का जो क्रम प्रारंभ किया था वह अपने आप में इतिहास की स्वर्णिम उपलब्धि है। बम्बई में आर्य समाज की स्थापना के बाद कैसे यह सारे भारत एवं अन्य कई देशों में फैल गया, यह अपने आपमें एक बड़ी बात है। स्थापना के पश्चात् आर्य समाज ने हर क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ी। चाहे वह पाखण्ड, अंधविश्वास, छुआछूत या स्त्री शिक्षा का क्षेत्र हो, चाहे देश की आजादी के आन्दोलन के नेतृत्व की बात हो, चाहे वेदों के पुनरुद्धार या राष्ट्र रक्षा की बात हो, आर्य समाज सबसे आगे रहा। समाज व संस्कृति की रक्षार्थ, धर्मान्तरण को रोकने की और व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध भी आर्य समाज ने गहरी चोट की। आर्यसमाज एक जन आन्दोलन की तरह आगे बढ़ता चला गया।

1947 में भारत को आजादी मिली। आजादी में आर्यसमाज का सर्वाधिक योगदान होते हुए भी आर्यसमाज ने उसकी कीमत नहीं चाही बल्कि राजनीति में सक्रिय न रहकर उसने सामाजिक सुधार के कार्यों को व सनातन संस्कृति की रक्षा को विशेष महत्त्व दिया और इसी पथ पर आगे बढ़ता गया। **उसी का कारण यह रहा कि** आर्यसमाज के व्यापक प्रभाव के चलते देश के अनेक क्षेत्रों तथा कार्यों में आर्यसमाज का प्रभुत्व बढ़ता गया। हमारे पूर्वजों ने, हमारे नेताओं ने, हमारे प्रचारकों ने तथा जीवनदानी महानुभावों ने, घोर पुरुषार्थ कर इसे नई ऊंचाईयां प्रदान कीं। इस अभियान में अनेकों संन्यासीवृन्द तथा ज्ञानी और दानशील महानुभावों की एक लम्बी श्रृंखला है जिनके अथक प्रयास से आर्य समाज की संस्थाओं को विश्वव्यापी **वृहद** आधार प्राप्त हुआ। दस हजार से अधिक शाखाएं आज पूरे विश्व में फैली हुई हैं।

इतिहास को गहराई देखने पर पता चलता है कि इन सबकी प्रेरणा के पीछे महर्षि के महान त्याग व बलिदान के साथ-साथ उनके अनगिनत अनुयायियों ने भी अनोखे त्याग, तप, समर्पण, संघर्ष और उत्साह के साथ आर्यसमाज का काम किया है, जो आज हमारी प्रेरणा का पुंज है।

आज आर्यसमाज को स्थापित हुए 143 साल पूरे होने जा रहे हैं। यह समय कम नहीं है- पर बहुत ज्यादा भी नहीं है। वैदिक सभ्यता के पतन का आरंभ जो महाभारत काल से हुआ था, उसको आज लगभग 5000 साल होने जा रहे हैं। इसके पूर्व समाज व विश्व की सुख शान्ति का मुख्य सूत्र केवल वैदिक संस्कृति ही थी। आज पुनः उसी गौरव को प्राप्त करना हमारा लक्ष्य है। यद्यपि उसके लिए समय भी पर्याप्त लगेगा, किंतु उसके लिए हमें निरन्तरता से उसी त्याग, उसी क्षमता, उसी इच्छा शक्ति, उसी कर्त्तव्यपराणता, उसी प्रेरणा व लगनशीलता के साथ पुरुषार्थ करना होगा जैसा हमारे पूर्वजों ने किया। इतिहास जहां हमें यह प्रेरणा देता है कि हम अपने स्वर्णिम इतिहास को न भूलें वहीं अतीत की गलतियों को फिर न दोहरायें ऐसी नसीहत भी देता है।

इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर हमने आर्य समाज के भविष्य की योजना बनाई है। उसमें हमें सफलता भी मिली है। प्रचार-प्रसार की दृष्टि से भारत के विभिन्न क्षेत्रों में आर्य समाज का सुन्दर कार्य हो रहा है। भारत के बाहर विदेशों में जहाँ-जहाँ आर्य समाजें हैं वहाँ-वहाँ सम्पर्क करके संगठन को मजबूत कर उत्साह पैदा करना और उनकी मूल जरूरतों को पूरा करने का प्रयास किया जा रहा है। शिक्षा क्रान्ति अभियान जो विशेषकर आदिवासी क्षेत्रों में सम्पादित हो रहा है, उसे और आगे बढ़ाना तथा यज्ञ के वैज्ञानिक शोध के लिए विशेष प्रकल्प बनाने की योजना भी शीघ्र ही प्रारंभ होने जा रही है। वैदिक साहित्य के क्षेत्र में प्रकाशन और वितरण की ओर विशेष कदम बढ़ाकर, आर्य जगत के नए प्रकल्प तैयार करके बालकों के चरित्र निर्माण हेतु रविवारीय कक्षा एवम् इस हेतु पाठ्यक्रम बनाया जा रहा है। ऐसे अन्य कई प्रकल्पों और कार्यों को आरंभ करने का प्रयास अपनी योग्यता, क्षमता व सीमा के आधार पर किया जा रहा है। आप चारों दिन के इस सम्मेलन में इन सबके बारे में विस्तार से जानेंगे।

महाशय धर्मपाल जी व केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह जी की अन्तरंगता का दृश्य साथ में हैं केन्द्रीय राज्य मंत्री सत्यपाल सिंह व सभा प्रधान सुरेश चन्द्र आर्य- केसरी

पंचकुला में एक विशाल भूखंड पर एक विश्वस्तरीय वैदिक शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की जा रही है जहाँ से विश्व स्तर के उपदेशक, भजनोपदेशक, संगीतज्ञ, प्रचारक तथा आर्यवीर तैयार होकर निकलेंगे। इस केन्द्र में सभी देशों के कार्यालय भी होंगे। वेद-विज्ञान के सभी शोध कार्य भी यहां प्रारम्भ होंगे।

हमारा ये मानना है कि आने वाला भविष्य अनेक समस्याओं से घिरा होगा। समाज के तौर तरीके बदल रहे हैं, परिवारों का स्वरूप बदल रहा है, विश्व का स्वरूप बदल रहा है। वर्त्तमान में मौजूद चुनौतियां व आगे आने वाली चुनौतियों के लिए हम आर्यों को, अपने आपको पूरी तरह से तैयार करना है, इसका चिन्तन भी इस महासम्मेलन में मुख्य रूप से होगा।

आर्यसमाज की विचारधारा वेद की शाश्वत विचारधारा है, जो सदा के लिए और सबके लिए जीवन जीने का एक संविधाान है। यह विचारधाारा स्थाई है, यह परिवर्तनशील व कमजोर पड़ने वाली नहीं है। अतः परमपिता परमात्मा के आशीर्वाद से महर्षि दयानन्द सरस्वती को आर्यसमाज का प्रथम सेनापति मानते हुए उनके आदर्श पर चलते हुए हमने गत 143 वर्षों में महान उपलब्धियां हासिल की हैं। अब आगे के लक्ष्य को पाने की तैयारी हम सबको मिलकर करनी है। 2024 में महर्षि दयानन्द जी के जन्म को 200 वर्ष होने जा रहे हैं। इन आगामी छः वर्षों में महर्षि की जीवनी व उसकी महानता से जन-जन को परिचित करवाने का दृढ़ संकल्प हमें इसी सम्मेलन में लेकर जाना है और उसे पूरा करना है। उसके ठीक एक वर्ष पश्चात् 2025 में आर्यसमाज की स्थापना के भी 150 वर्ष पूर्ण होंगे। ये सब हमारे लिए गौरव के क्षण होंगे किंतु उसके साथ-साथ हमें यह भी विचारना होगा कि इन 150 वर्षों में हम कहां पहुंचे, लक्ष्य के कितने निकट पहुंचे और कितने दूर। अब पुनः पहले से अधिक सक्रिय होकर इन दोनों अवसरों पर हमें समस्त संसार को एक नई चेतना और नई दिशा का संदेश देना है।

हम आज सार्वदेशिक सभा की ओर से उन सभी महानपुरुषों का तथा बलिदानियों का स्मरण करते हैं जिन्होंने आर्यसमाज को अपने तप व बलिदान से सींचा है। हम आज उन सब संन्यासियों, विद्वान महानुभावों व सार्वदेशिक सभा के सभी पूर्व अधिकारियों को भी स्मरण करते हैं जिन्होंने अपने अद्‌भुत त्याग व कर्मठता से इस संगठन को आगे बढ़ाया। आज हमें वे सभी कार्यकर्त्ता स्मरण आते हैं, जिन्होंने अपने परिवार को और अपनी सुख सुविधाओं को पीछे रखते हुए आर्यसमाज के कार्यों के लिए सारा जीवन समर्पित कर दिया।

भारत के सम्मानीय राष्ट्रपति महोदय श्री रामनाथ जी कोविन्द ने आज अपने कर-कमलों से इस ऐतिहासिक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्‌घाटन करके पूरे आर्यजगत को गौरवान्वित किया है।

इस महासम्मेलन के उद्‌घाटन के अवसर पर इस कार्य में लगे सभी आर्यजनों का विशेषकर दिल्ली की समस्त आर्य समाजों की महिलाओं तथा पुरुष आर्यजनों का, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान भाई धर्मपाल आर्य जी का एवं समस्त सहयोगी टीम का एवं सभी आर्य संगठनों का लम्बे समय से किये गए परिश्रम के प्रति आभार व्यक्त करता हूं।

मैं इस अवसर पर भारत की समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारियों का तथा प्रतिनिधियों का, तथा समस्त आर्यभद्र पुरुषों एवं मातृशक्ति का हृदय से आभारी हूं, जिन्होंने भारी संख्या में पधारकर इस सम्मेलन में एक नई ऊर्जा और उत्साह का संचार किया है।

मैं विदेशों से पधाारे हुए सभी आर्यजनों को भारत की समस्त आर्यसमाजों की ओर से हार्दिक बधाई देता हूं और आभार व्यक्त करता हूं। आप सबके आगमन से इस सम्मेलन का अन्तर्राष्ट्रीय मंच जीवन्त हो उठा है। आपकी उपस्थिति से सभी अत्यन्त उत्साहित एवं आनन्दित हैं।

मैं उन सभी विशिष्ट अतिथियों के प्रति भी हृदय से आभार प्रदर्शित करता हूं जिनकी गरिमामयी उपस्थिति से यह सम्मेलन एक अविस्मरणीय स्वरूप धारण करने जा रहा है।

अपने वक्तव्य के अन्त में, मैं अपनी ओर से और आप सबकी ओर से एक ऐसी महान विभूति के प्रति अपना आभार व्यक्त करना चाहता हूं, जो 95 वर्ष की आयु में भी हमारी प्रेरणा के अदम्य स्रोत बने हुए हैं। आर्यजगत के ऐसे भामाशाह श्रद्धेय महाशय धार्मपाल जी ने मुक्त हस्त से इस सम्मेलन की सफलता के लिये अपना आशीर्वाद प्रदान किया है। हम उन्हें शत्-शत् नमन करते हैं और परमात्मा से उनके मंगलमय स्वस्थ जीवन की कामना करते हैं।

बन्धुओ, यह सम्मेलन हम सबका है। अच्छी से अच्छी व्यवस्थाएं आप सबको उपलब्ध कराने के अथक प्रयासों के बावजूद भी कुछ असुविधाएं हो सकती हैं। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप आर्य समाज के सच्चे मिशनरी के रूप में तथा एक शुभचिन्तक के रूप में उन असुविधाओं को नज़रअंदाज करते हुए इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन को ऐतिहासिक सफलता प्रदान करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

आप सभी को पुनः धन्यवाद।

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में मुख्यमंत्री योगी ने दिया प्रयागराज कुंभ 2019 का न्यौता

आर्यसमाज मात्र संगठन नहीं, अपितु धर्म, संस्कृति और संस्कारों का एक विराट आंदोलन

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में कहा कि यह अपने आप में एक महाकुंभ जैसा अद्‌भुत दृश्य है। यहां पर आकर मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मान रहा हूं। महर्षि दयानंद की शिक्षाएं और उनके संदेश मानव मात्र के लिए अनुकरणीय है। हमने उत्तरप्रदेश में कक्षा एक से लेकर आठवीं तक महर्षि दयानंद, स्वामी श्रद्धानंद सहित अनेक अन्य महापुरुषों के जीवन चरित्रें का पाठ्‌यक्रम में समावेश किया है। जिससे भारत की संस्कृति संस्कारों का बच्चों में रोपण हो सके।

ज्ञात हो कि उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री जी ने आर्यों के इस अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तुलनात्मक समीक्षा 2019 में प्रयागराज में होने वाले महाकुंभ से करते हुए अपने उद्‌बोधान में कहा कि हमने 192 देशों सहित भारत के छह लाख गांवों को आमंत्रि किया है। इसके साथ-साथ सभी शिक्षण संस्थाएं, धार्मिक संगठन, ज्ञान-विज्ञान से जुड़े हुई संस्थाएं, सभी धार्मावलम्बियों को आमंत्रित किया है। जनवरी महीने में शुरू होने वाला यह महाकुंभ लगातार 48 दिनों तक चलेगा जो अपने आप में एक अद्‌भुत कीर्तिमान स्थापित करने वाला सिद्ध होगा। लेकिन अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को देखकर ऐसा लगता है कि यह भी अपने आपमें अद्वितीय और अनुपम है। यहां पर आदिवासी अंचलों से लेकर 32 देशों के आर्य प्रतिनिधियों सहित हर आयुवर्ग के लोग उपस्थित है। मैं आप सभी को भी महाकुंभ का निमंत्रण देता हूं। प्रयागराज में आयोजित होने वाले महांकुभ में भी आर्यसमाज का एक विशाल आयोजन होना चाहिए जिसमें वेद और महर्षि दयानंद की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया जाए। मैं आर्य समाज को आश्वस्त करना चाहता हूं कि आप उत्तरप्रदेश में आर्य समाज के द्वारा कोई भी कार्य करें तो सरकार आपके साथ है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने सम्बोधन में कहा कि यदि आर्य समाज की संपत्ति पर कोई कब्जा किया हुआ है तो हमें बताइए, उसे जल्दी ठीक करवा दूंगा। हमलोगों ने भूमाफिया द्वारा कब्जा किए गए हजारों हेक्टेयर भूमि को उनलोगों से छुड़ाया है। इसके लिए हमने एंटी भूमाफिया टास्क फोर्स बनाया है। इसे भूमाफिया से छुड़ाने के लिए सरकारी धन का दुरूपयोग नहीं हो रहा बल्कि भूमाफिया से ही ये पैसे भी वसूलते हैं।.....ये उक्त बातें यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रोहिणी के जापानी पार्क में चल रहे अंतरराष्ट्रीय आर्य सम्मेलन के दौरान कही।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए- केसरी

योगी ने आगे कहा कि सबों के लिए राष्ट्रीय धर्म सबसे बड़ा धर्म होना चाहिए। नक्सलवाद, आतंकवाद, भ्रष्टाचार एवं देश के विरूद्ध काम करने वालों के खिलाफ आवाज उठाएं, मूकदर्शक बनकर न रहें। हम सबका कर्तव्य है कि भारत मां के सच्चे पुत्र की भांति अपना कर्तव्य निर्वहन करें। यह याद रहे कि दयानंद सरस्वती ने लोगों को आर्य बनाने का रास्ता दिखाया और उसी में मानवजाति का कल्याण है। यदि आर्य समाज सक्रिय हो जाए तो समाज में सामाजिक-सांस्कृतिक सभी समस्याएं अपने आप दूर हो जाएगी। अपने कार्यां के बारे में योगी ने उल्लेख करते हुए कहा कि भारत की परंपरा कृषि प्रधान परंपरा है जिसमें गौ आधारित कृषि उल्लेखनीय है। हमने यूपी के पाठ्यक्रम में काफी कुछ बदलाव किया है। इस पाठ्यक्रम में महापुरूषों, क्रांतिकारियों के जीवन को शामिल करवाया है। हमने महापुरूषों के नाम पर छुट्टियों को देना बंद कर दिया है और कहा है कि महापुरूषों के नाम पर गोष्ठी करें और उसमें बच्चों को महापुरूषों के बारे में बताया जाए। साथ ही कहा ापित हो जिसमें वैदिक हवन और मंत्रों से स्कूलों की शुरुआत हो। कि शिक्षा क्षेत्र में गुरूकुल व्यवस्था फिर से स्थापित हो जिसमें वैदिक हवन और मंत्रों से स्कूलों की शुरुआत हो। अपने संबोधन के अंत में मुख्यमंत्री योगी ने लोगों को आमंत्रित करते हुए कहा कि जनवरी 2019 में यूपी के प्रयागराज में भव्य कुंभ का आयोजन होने जा रहा है। यह कुंभ मकर संक्रांति से लेकर शिवरात्रि तक चलेगा। इस कुंभ में 152 देशों को आमंत्रित किया गया है और आप सभी को भी इस कुंभ के लिए आमंत्रित कर रहे हैं।

जाज्वल्यमान रहा है आर्य समाज का इतिहास- आचार्य देवव्रत

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आचार्य देवव्रत राज्यपाल हिमाचल प्रदेश ने आर्यजनों के विशाल समूह को सम्बोधित करते हुए कहा टंकारा की धरती पर जन्में ऋषि दयानंद सम्पूर्ण उत्तर भारत से जितनी भी कुरीतियां थी उनका निर्वाहरण किया। जिस समय कोई जात-पात के खिलाफ आवाज नहीं उठा सकता था, उस समय स्वामी जी ने इस बुराई का प्रबल विरोध किया। वेदों के अनुसार वर्ण व्यवस्था को सामने लाये, नारी जाति को पढ़ने का अधिकार दिलाया और सबसे पहले स्वदेशी शब्द का उद्‌घोष करने वाले महर्षि दयानंद थे। उस समय आजादी की बात करने से भी लोग डरते थे किंतु ऋषि दयानंद ने सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुहलास में लिखा कि चाहे कि विदेशी राजा कितना ही अच्छा क्यों न हो लेकिन स्वदेशी राजा से अच्छा नहीं हो सकता। शिक्षा के क्षेत्र में और मानवसेवा के क्षेत्र में आर्य समाज का इतिहास बहुत ऊचा है। मैं उपस्थित सभी आर्यजनों का आवाहन करता हूं कि हमें युवा शक्ति को दिशा देनी है, वेद प्रचार को गति देनी है, हमें प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना है, ऋषि दयानंद ने किसान को राजा का राजा कहा है, आज का राजा किसान आत्महत्या करने को मजबूर है। हमें ऋषि दयानंद की पुस्तक गौ करुणानिधि के अनुसार गौवंश को सुरक्षित एवं सवर्धत करना है। अन्न के बाद जल, पर्यावरण सब दूषित हो रहा है। हमें जैविक खेती को बढ़ावा देना है। हमारा राष्ट्र महान बने एक नई सोच, नया चिंतन हमें युवा शक्ति को देना है।

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल तथा मूर्धन्य विद्वान आचार्य देवव्रत के साथ हैं केन्द्रीय मंत्री विजय गोयल, सभा प्रधान सुरेश चन्द्र आर्य तथा स्वामी धर्मेश्वरानन्द- केसरी

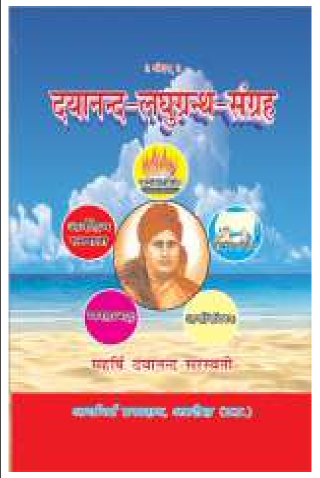

अवश्य पढ़ें - आज ही मंगाएं

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित संग्रहणीय पुस्तक

दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह

इसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत इन पांच पुस्तकों का संग्रह है-

- पंचमहायज्ञविधि
- आर्योद्‌देश्यरत्नमाला
- गोकरुणानिधि
- व्यवहारभानु
- आर्याभिविनयः

पृष्ठ : 212, मूल्य : 60/- रुपये

पुस्तकें वी०पी०पी०, रजिस्टर्ड डाक, रेलवे तथा ट्रांस्पोर्ट से भेजी जा सकती हैं। अधिक मंगाने पर विशेष छूट उपलब्ध है।

पता- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) सम्पर्क सूत्र : 09412139333

आध्यात्मिक चिन्तन एवं वेदानुशीलन पर आधारित स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु' द्वारा लिखित पुस्तक

आज ही मंगाएं यह संग्रहणीय पुस्तक

आयुष्मान् भव

(दीर्घ अर्थात् लम्बी आयु प्राप्त करो)

१२० पृष्ठ, रंगीन आवरण

: पुस्तक प्राप्ति स्थल :

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु'

आर्यसमाज मन्दिर, बिहारीपुर

बरेली (उ0प्र0)- 243003

चल0 : 094123721179, 9759527485

मूल्य : 25 रुपये

आर्यावर्त केसरी
१६-३१ दिसम्बर २०१८

महासम्मेलन के मंच पर मनोज तिवारी व केन्द्रीय मंत्री सत्यपाल सिंह, स्वामी धर्मेश्वरानन्द, आचार्य देवव्रत व सुरेश चन्द्र आर्य आदि सहित आर्य नेतागण- केसरी

सम्मेलन में छाई एक नई दृष्टि और एक नई सोच

दान की अपील न करने की नूतन परंपरा का आगाज़

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 में चार दिनों तक लगातार लगभग 20 सम्मेलन सत्रों का सफल आयोजन अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसके साथ-साथ 17 सभागारों में प्रतिदिन दो-तीन सत्रों में विविध प्रेरणाप्रद आयोजन करना भी एक अद्‌भुत मिसाल है। इस सम्मेलन की अनुगूंज विश्व के कोने-कोने में तमाम धर्मावलंबियों के लिए एक प्रेरणा है। इस सम्मेलन में लाखों लोगों ने भाग लिया, लाखों महानुभावों के लिए चार दिनों तक भोजन से लेकर स्वच्छ पेयजल, दूध-छाछ, फल सहित क्षेत्रीय-प्रांतीय व्यंजनों की व्यवस्था, विदेशियों के भोजन की स्पेशल व्यवस्था, 60 स्थानों पर सुविधाजनक आवासीय व्यवस्था, जन सुविधाओं का उत्तम प्रबंधन, 10 लाख स्क्वेयर फुट ऐरिये में वाटर प्रूफ पांडाल की व्यवस्था, चार दिनों तक 60 बसों की व्यवस्था, दिव्य-भव्य साज-सज्जा, 33 लाख स्क्वेयर फुट क्षेत्रफल पर सुरक्षा व्यवस्था, लाइटिंग की व्यवस्था और भी अनगिनत अनुपम व्यवस्थाएं चार दिनों तक लगातार चलती रही। किंतु किसी भी मंच से एक बार भी किसी भी तरह की दान की अपील नहीं की गई। आर्य जगत में इतने बड़े ऐतिहासिक विश्वस्तरीय अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का सफल आयोजन करना और किसी से कोई सार्वजनिक अपील न करना एक नूतन महान परंपरा का शुभारंभ माना जाएगा। इसके साथ ही किसी भी दानदाता के द्वारा दिए गए दानराशि, वस्तु आदि के सहयोग की घोषणा भी नहीं की गई। यह अपने आपमें एक विशेष उपलब्धि और उपयोगी प्रेरणा है।

दो लाख से अधिक लोगों के भोजन का कुशल प्रबंधन

एक बेमिसाल आदर्श प्रेरणाप्रद व्यवस्था

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 की अनेक विशेषताओं में भोजन का कुशल प्रबंधन अपने आप में एक प्रमुख प्रेरणाप्रद व्यवस्था सिद्ध हुआ। जिसकी अधिकांश लोगों ने उन्मुक्त हृदय से भूरि-भूरि प्रशंसा की। किसी भी आयोजन में भोजन-प्रसाद आदि का अपना महत्व होता है। लेकिन जब बात लाखों लोगों के भोजन की हो तो बड़ी से बड़ी व्यवस्था में भी लोग खामी अक्सर ढूंढते पाए जाते हैं। किंतु चार दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भोजन का इतना बड़ा प्रबंधन किया गया था कि एक साथ हजारों लोग भोजन कर रहे थे, फिर भी न कोई हड़बड़ाहट थी और न ही आपाधापी, शांति के साथ, मंत्रोच्चारण के साथ, पहले आप, पहले आप के आदर्श संबोधन के साथ आर्यजनों ने स्वच्छ, सुपाच्य, पोषक, ताजा-मधुर भोजन ग्रहण किया। विद्वानों के लिए, कार्यकर्त्ताओं के लिए और विदेशियों के लिए अलग-अलग भोजन की संपूर्ण व्यवस्था की गई थी। भोजन की गुणवत्ता में स्वच्छ पेयजल, शुद्ध-सात्विक दाल-सब्जी-चावल आटा, घी-तेल-मसाले प्रयोग किए गए थे। एक साथ अनेक प्रकार के व्यंजन-जिनमें स्वच्छ मीठे पानी का प्रयोग किया गया, दाल, चावल, सब्जी, कढ़ी, पूरी, तवा रोटी, तन्दूरी रोटी, इडली सांबर, गुड़, छाछ, दूध, फल आदि सुपाच्य एवं स्वादिष्ट भोजन सबके मन को भाए। इसके साथ-साथ विभिन्न प्रांतों से आए आर्यजनों के भोजन क्रम को भी ध्यान में रखकर व्यंजन बनाए गए थे।

विदेश से आए हुए आर्यजनों के लिए भोजन की अलग से व्यवस्था की गई थी। भोजन स्थल पर विशाल पांडाल में लोगों को बैठकर शांति से भोजन करने में खूब आनंद आया, जिसकी समय-समय पर आर्यजनों में चर्चा भी होती रही। 28 एवं 29 अक्तूबर की आर्यजनों की सुविधा के लिए भोजन की पैकिंग की भी विशेष रूप से व्यवस्था की गई। जिससे रास्ते मे जाते वक्त आर्यजनों को भोजन की सुविधा प्रदान की जा सके। इस मनभावन विशाल-विराट भोजन व्यवस्था के लिए योजना बनाने वाले, व्यवस्थापक, कार्यकर्त्ता, वितरण कर्त्ता, बीच-बीच में माईक से निर्देशन कर्त्त आदि सभी की गहरी निष्ठा और सेवा समर्पण का भाव स्तुत्य है।

फूल मालाओं का प्रयोग न करना एक व्यापक सोच

आर्य समाज के इतिहास में आदर, सत्कार, सम्मान की विशेष परंपरा सदा से विद्यमान है। किंतु हमारे यहां समय-समय पर प्रभातफेरी, शोभायात्रा, विशेष पर्व, वार्षिक उत्सव और सम्मेलनों के आयोजनों में मूर्धन्य संन्यासियों, विद्वानों, आचार्यों, यजमानों, आर्य नेताओं, राजनेताओं, दानदाताओं, प्रतिष्ठित उद्योगपतियों को मंच पर फूलमाला पहनाकर सम्मानित किया जाता रहा है। इस औपचारिक सम्मान में घंटे भर से ज्यादा का समय लग जाता है, जिसके परिणामस्वरूप जो महत्वपूर्ण सत्संग-प्रवचन, प्रेरक भजन, विशेष चिंतन-मनन का समय निर्धारित होता है वह निकल जाता है और धीरे-धीरे प्रबुद्ध श्रोतागण बोर होने लगते हैं और इस कारण हम अपने कार्यक्रम के निश्चित उद्‌देश्य से विमुख हो जाते हैं। इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि हम अपने कार्यक्रमों में महानुभावों का सम्मान न करें। सभी मुख्य एवं विशिष्ट अतिथियों का पूरा आदर सत्कार तो होना ही चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 में भारत के राष्ट्रपति से लेकर गृहमंत्री, 150 विद्वान, 250 संन्यासी, चार कैबीनेट मंत्री, पांच सांसद, उद्योगपति, सैकड़ों वरिष्ठ एवं विशिष्ट अतिथिगण प्रतिदिन उपस्थित रहे। मुख्य मंच से लेकर 17 सभागारों तक कहीं भी फूलमाला का प्रयोग नहीं हुआ और सबको पूर्ण रूप से सम्मानित किया गया।

इस अभूतपूर्व अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन से पूरे आर्य जगत को प्रेरणा लेनी चाहिए और सुनिश्चित करना चाहिए कि हमें अपने साधारण और विशेष आयोजनों में फूलमाला पहनाने के प्रचलन को कम करना चाहिए अथवा इस से बचना चाहिए। जिससे प्रत्येक कार्यक्रम का समयानुसार शुभारंभ और समापन हो सके और हम अपने मुख्य लक्ष्य और उद्‌देश्य को प्राप्त कर सकें।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, नई दिल्ली में मंचासीन आर्यजगत की दिव्य विभूतियां- केसरी

मानव कल्याण एवं विश्व शान्ति एकता महायज्ञ में स्वामी रामदेव जी ने घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ के उद्घोष से गुंजायमान करा दिया गगन- केसरी

सूचना

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2018 के चित्रों को देखने और डाउनलोड करने के लिए इंटरनेट के माध्यम से https://www.facebook.com/AjayTankarawala/ पर जाएं और लाइक व शेयर अवश्य करें।

-अजय सहगल

महर्षि दयानन्द जन्मस्थान टंकारा (गुजरात) में

बोधोत्सव का भव्य आयोजन

आर्यजनों को जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में भी महर्षि दयानन्द जन्मस्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन रविवार, से मंगलवार अर्थात् 3 से 5 मार्च 2019 तक किया जाएगा। आपसे निवेदन है कि आप इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

-रामनाथ सहगल, मंत्री

अवश्य पढ़ें- आज ही मंगाएं

आर्य समाज की विचारधारा, वैदिक चिन्तन, तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों को जानने के लिए पढ़िए

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित
तथा आचार्य क्षितीश वेदालंकार द्वारा लिखित लघु पुस्तिका

आर्य समाज की विचारधारा

प्रत्येक परिवार, आर्य समाज तथा विद्यालयों में अवश्य होनी चाहिए यह लघु पुस्तिका। उत्सवों, साप्ताहिक सत्संगों, धार्मिक, सामाजिक अनुष्ठानों तथा शोभायात्रा आदि में सैकड़ों की संख्या में बांटें यह पुस्तिका, और जन-जन तक पहुंचाएं आर्य समाज व ऋषि दयानन्द सरस्वती की वैदिक विचारधारा।

न्यूनतम ५०० पुस्तकें लेने पर वितरक में नाम व पता प्रकाशन की सुविधा, तथा मूल्य में भी विशेष छूट।

हमारा पता है- **आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा**-244221 (उ.प्र.), **मो० :** 09412139333

सत्यार्थप्रकाश पढ़कर पाओ लाख रुपये

आर्यावर्त केसरी सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार योजना

सत्यार्थप्रकाश के मर्म को समझने-समझाने का दायित्व विद्वानों का है। हमारा प्रयास सत्यार्थप्रकाश के विद्वान तैयार करना है, जो महर्षि दयानन्द के सधर्म रथ को आगे बढ़ा सकें। इसी उद्देश्य से आर्यावर्त केसरी पाक्षिक के सानिध्य में श्री सुमन कुमार वैदिक के संयोजन में सत्यार्थप्रकाश परीक्षा आयोजित की जा रही है।

परीक्षा में बैठने के लिए आर्यावर्त केसरी, निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा के पते पर अपना नाम, पता, फोटो, परिचय की छायाप्रति के साथ 150/- रुपये की धनराशि देनी होगी, जिसमें प्रतिभागी को एक सत्यार्थप्रकाश दिया जाएगा या छः माह की आर्यावर्त केसरी पाक्षिक की सदस्यता दी जाएगी। यदि आप अपना रजिस्ट्रेशन डाक द्वारा कराएंगे, तो उस स्थिति में आर्यावर्त केसरी के भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या-30404724002 (IFSC कोड SBIN 0000610) में 200/- रुपये जमा कराने होंगे तथा रसीद की छायाप्रति भेजनी होगी। पंजीकरण दिनांक- 01 अक्टूबर 2018 से प्रारम्भ हो चुके हैं। पंजीकरण आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के कार्यालय में अथवा ग्रेटर नोएडा स्थित श्री सुमन कुमार वैदिक के निवास पर कराये जा सकते हैं।

प्रथम पुरस्कार- एक लाख रुपये तथा स्मृति चिह्न
द्वितीय पुरस्कार- पचास हजार रुपये तथा स्मृति चिह्न
तृतीय पुरस्कार- पच्चीस हजार रुपये तथा स्मृति चिह्न
अनेक नामित पुरस्कार- इसकी संख्या निश्चित नहीं है क्योंकि ये श्रद्धालुओं के परिजनों के नाम से दिये जाएंगे।
पच्चीस पुरस्कार- एक-एक हजार रुपये।

-: कैसे बनेंगे विजेता :-

(1) परीक्षा में वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे, जिनका उत्तर उत्तरपुस्तिका में लिखना होगा।
(2) किसी भी आयुवर्ग का व्यक्ति परीक्षा दे सकता है।
(3) आर्यावर्त केसरी के 25 सदस्य एक स्थान पर बनाने वाले का पंजीकरण निःशुल्क होगा एवं आर्यावर्त केसरी की ओर से उसको फोटोयुक्त प्रेस परिचय पत्र दिया जाएगा।
(4) पत्र-व्यवहार में सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा लिफाफे पर अवश्य लिखें। परीक्षा का आयोजन दिनांक- 07 जुलाई 2019 को इन प्रस्तावित केन्द्रों- दिल्ली, अमरोहा, ग्रेटर नोएडा, लखनऊ, नजीबाबाद, बरनावा, सासनी, मेरठ, बनारस, बरेली, गुरुग्राम, महेन्द्रगढ़, झज्जर, हिसार, रोहतक, मुम्बई, बेंगलूरु, कलकत्ता, चेन्नई, होशंगाबाद, हैदराबाद, बोकारो, भोपाल, चण्डीगढ़, रोजड़, कोटा, हरिद्वार, उदयपुर, अहमदाबाद आदि में सम्पन्न होगी। परीक्षा केन्द्रों की संख्या बढ़ाने अथवा घटाने तथा परीक्षा तिथि में परिवर्तन करने का अधिकार संयोजक मण्डल को होगा।

विशेष :

1- जो भी परीक्षार्थी विजेता घोषित होगा, उसको पुरस्कार प्राप्त करने से पूर्व मंच पर अपनी योग्यता भी सिद्ध करनी होगी। पुरस्कार-मंच पर उससे जनसामान्य के द्वारा सत्यार्थप्रकाश से संबन्धित प्रश्न पूछे जाएंगे।
2- अपने प्रियजनों की स्मृति में उनके नाम से।
3- सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा की निधि हेतु मुक्तहस्त से दान दें, रजिस्ट्रेशन कराने में अक्षम प्रतिभागियों को शुल्क में मद्द दें।
4- आयोजन में हमसे जुड़कर सहयोग करें, तथा अपने शहर में परीक्षा का केन्द्र बनवाएं। धन्यवाद,

सुमन कुमार वैदिक- मुख्य संयोजक
निवास- जे.380, बीटा-II,
ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) मो. 8368508395

डॉ० अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
मो. 9412139333

डॉ० अनिल रायपुरिया- संयोजक
नि. कोट बाजार, अमरोहा
मोबा. : 9837442777

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की चित्रमय झांकियाँ

स्वामी विवेकानन्द जी तथा सभा मंत्री प्रकाश आर्य सम्बोधन की मुद्रा में– केसरी

महर्षि पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति प्रो० महावीर अग्रवाल के साथ विशिष्ट अतिथिगण– केसरी

भाजपा के प्रवक्ता हिमांशु त्रिवेदी को प्रतीक चिन्ह भेंट करते सुरेश चन्द्र आर्य, सुदर्शन शर्मा व विनय आर्य आदि– केसरी

मंचासीन महाशय धर्मपाल, स्वामी रामदेव, सिक्किम के राज्यपाल गंगा प्रसाद तथा हि०प्र० के राज्यपाल आचार्य देवव्रत– केसरी

विशाल सभागार में उपस्थित देश–विदेश से पधारे शिष्ट–विशिष्ट श्रद्धालु आर्यजन– केसरी

: नियमित कॉलम का प्रकाशन :

ऐसे होते हैं आर्य

सम्माननीय पाठकवृन्द!

हम आपके प्रिय व वैदिक संस्कृति के संवाहक आर्यावर्त केसरी में 'ऐसे होते हैं आर्य' नाम से एक नियमित कॉलम प्रकाशित किया जा रहा है। अत: प्रबुद्ध आर्यजनों से निवेदन है कि ऐसे श्रेष्ठ महानुभावों, जिन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ आवाज़ उठायी है व समाज हित में अच्छे कार्य किये हैं, जिनसे कि आमजन प्रेरणा ले सकें, से सम्बन्धित जानकारी, उनके नाम व पते तथा एक रंगीन पासपोर्ट साइज़ फोटो सहित भेजने का कष्ट करें। धन्यवाद,

–सम्पादक, आर्यावर्त केसरी,
निकट– मुरादाबादी गेट, अमरोहा–244221 (उ.प्र.)
मोबा. : 9412139333

श्री, समृद्धि, यश, वैभव, सुस्वास्थ्य व दीर्घायुष्य की दें

मंगलकामनाएं

जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, अथवा किसी विशेष उपलब्धि जैसे पावन अवसरों पर अपने परिजनों, मित्रों व शुभचिन्तकों को बधाई व शुभकामनाएं देना न भूलें।

आओ आर्यावर्त केसरी के माध्यम से ऐसे बधाई संदेश व शुभकामनाएं प्रकाशित कराएं...

और प्रदान करें
आर्यावर्त केसरी के प्रचार-प्रसार यज्ञ में 501/- की सहयोग रूपी पावन आहुति।

–सम्पादक (मोबा. : 9412139333)

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawartkesari@gmail.com

आर्यावर्त केसरी
संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक',
(मोबाा : 9456274350)
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र,
डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार,
डॉ. ब्रजेश चौहान, अमित कुमार
मुद्रण- इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य